समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• जनवरी २०२५ • वर्ष ७६ • अंक ०१
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

CENTURYPLY®

CENTURYPLY®
CENTURYLAMINATES®
CENTURYVENEERS®
CENTURYDOORS®
CENTURYEXTERIA®
Decorative Exterior Laminates
CENTURYPVC®
CENTURYPARTICLEBOARD®
The Eco-friendly and Economical Board
CENTURYPROWUD®
*MDF-The **wood** of the future*
zykron
FIBRE CEMENT BOARDS & PLANKS
SAINIK 710
WATERPROOF PLY
SAINIK LAMINATES™
BOLD & BEAUTIFUL

CENTURY PLYBOARDS (INDIA) LTD.
Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata - 700 088
For any queries, SMS 'CPIL' to 56070 or call us on **1800 5722 122**

sampann
TRUST• FUTURE • PROSPERITY
SAMPANN GROUP
Central Kolkata's Leading
Real Estate Developer
53 Successfully Completed Projects,
11 Ongoing Projects,
16 Upcoming Projects,
Sampann Group offers Vastu compliant office and shop spaces, ideal for businesses and investments. Join us today for secure and profitable opportunities.
Vicky Raj Sikaria Wishing You All The Best.
Hemanta Basu Sarani
Near : Great Eastern
(Dalhousie)
Jackson Lane
(Brabourne Road)
Madhab Kesto Sett Lane
Kalakar St. (Bapu Tea Stall)
UNLIMITED
BUSINESS.
LIMITED
EDITION.
Book now
or regret later!
M G Road (Bara Bazar)
Corporate Office : Sikaria Tower
+91 7044947777
infosampanngroup@gmail.com
www.sampanngroup.com

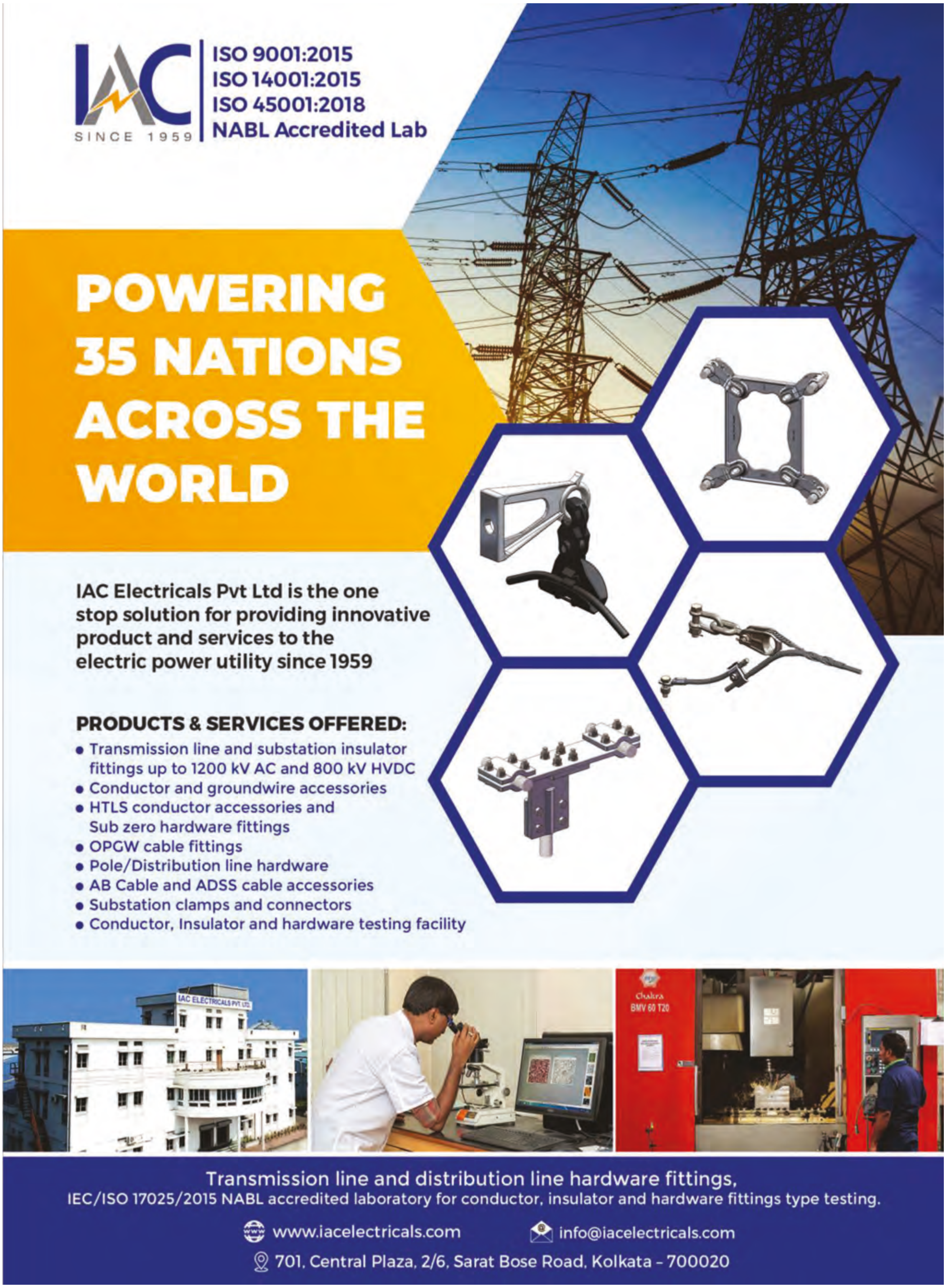
IAC
SINCE 1959
ISO 9001:2015
ISO 14001:2015
ISO 45001:2018
NABL Accredited Lab
POWERING 35 NATIONS ACROSS THE WORLD
IAC Electricals Pvt Ltd is the one stop solution for providing innovative product and services to the electric power utility since 1959
PRODUCTS & SERVICES OFFERED:
• Transmission line and substation insulator fittings up to 1200 kV AC and 800 kV HVDC
• Conductor and groundwire accessories
• HTLS conductor accessories and Sub zero hardware fittings
• OPGW cable fittings
• Pole/Distribution line hardware
• AB Cable and ADSS cable accessories
• Substation clamps and connectors
• Conductor, Insulator and hardware testing facility
Transmission line and distribution line hardware fittings,
IEC/ISO 17025/2015 NABL accredited laboratory for conductor, insulator and hardware fittings type testing.
www.iacelectricals.com
info@iacelectricals.com
701, Central Plaza, 2/6, Sarat Bose Road, Kolkata - 700020

समाज विकास

◆ जनवरी २०२५ ◆ वर्ष ७६ ◆ अंक १

◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **चिट्ठी आई है एवं संदेश**	५-६, ७-८
● **संपादकीय :** बिखरते संयुक्त परिवार	९-१०
● **आपणी बात : शिव कुमार लोहिया** संस्कार-संस्कृति चेतना कार्यक्रम को अभियान बनायें	११-१२
● **रपट**	
स्थापना दिवस समारोह	१५-१६
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक	१७
सम्मेलन समाचार	१८
विशेष **संस्कार-संस्कृति चेतना**	
गणतंत्र दिवस, कुंभ, अर्द्धकुंभ, पूर्णकुंभ और महाकुंभ, क्या है मकर संक्रांति	२१-२३
● **प्रांतीय समाचार**	
प्रांत/शाखा द्वारा स्थापना दिवस का पालन	१९-२०,२५
महाराष्ट्र, केरल, झारखंड, पूर्वोत्तर, उत्कल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक	२६-३०,३३
● **शाखा समाचार**	३४-३५
● **वक्तव्य – श्री वासुदेव देवनानी** अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा	३६
● **आलेख – डॉ. संजय हरलालका** दलदल में धंसता समाज, कौन लगायेगा पार	३७
● **सभा संस्था समाचार**	३८
● **विविध** प्यारो राजस्थान, बहु की अपने ससुर को हृदयस्पर्शी श्रद्धांजलि	३९-४०

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं संपर्क कार्यालय : ४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिए **भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ **प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा** ◆ **संपादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

आपके द्वारा लिये गये सभी सुझाव बहुत ही सराहनीय और प्रेरणा दायक हैं।

इन सभी सुझावों को लागु करने की पुरी कोशिश करेंगे और इन सभी सुझावों को घर-घर पहुँचाने की कोशिश करेंगे और ध्यान रखेंगे।

मेरा एक सुझाव हैं कि हफ्ते में एक बार गांव के बड़े लोग मिलकर कोई मन्दिर या समाज के भवन में अपनी बैठक एवं मीटिंग करे और पुरानी बातों को शेयर करे और आने वाली नई पीढ़ी के बच्चों को आने वाले भविष्य के बारे में जानकारी देवे।

हो सके तो महीने में एक बडी मीटिंग बुलाई जावे और हिन्दुत्व एवं समाज में होने वाली कुरीतियों को बन्द करने की ओर ध्यान आकर्षित करे।

– ओमप्रकाश अग्रवाल
विजयवाड़ा

आपके द्वारा समाज के प्रति व्यक्त संदेश को पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आपने जो कहा कि **"बुराई इसलिए नहीं फैलती कि बुरे अधिक है, बल्कि इसलिए फैलती हैं कि अच्छाई मुखर नहीं हो पाती"**, यह वाक्य न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि समाज को एक नई दिशा देने वाला भी है।

समारोहों में अनावश्यक खर्च, बारात के आगमन में अत्यधिक विलंब, सार्वजनिक रूप से मद्यपान, और प्री-वेडिंग शूट के प्रदर्शन जैसी बातों पर आपकी सोच और सुझाव अत्यंत सराहनीय हैं। इससे समाज निश्चित ही एक सकारात्मक और आदर्श दिशा की ओर अग्रसर होगा।

सिलीगुड़ी शाखा के कर्मठ सदश्य श्री मनोज जी शर्मा का दिन में शादी एक नई पहल एक अच्छी शुरुआत है, अपने समाज की 'सिलीगुड़ी की बेटी' केक बनाने में 'अंतरराष्ट्रीय सम्मान' हासिल करना यह बहुत बड़ी बात है जिसे **'समाज विकास पत्रिका'** के माध्यम से सभी तक पहुंचेगी। हमे गर्व है 'बेटी राखी मित्रुका' पर।

साथ ही गर्व है हमारे समाज के डॉ. श्याम सुंदर अग्रवाल पर जिन्होंने विवाह में एक नई मिशाल कायम की।

आपका मार्गदर्शन हमें सदैव मिलता रहे, यही कामना करते हैं। धन्यवाद।

– अरुण कंदोई
सचिव, पश्चिम बंग प्रा. मा. स., सिलीगुड़ी

सामाजिक समरसता, आपसी सौहार्द, एक-दूसरे के प्रति गहन विश्वास, प्रेम और भाईचारा एक सुदृढ़ समाज की नींव रखते हैं। हम सभी सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ इन सिद्धांतों और परंपराओं को पुनः स्थापित करने के प्रयास में जुटे हुए हैं। हमारा दृढ़ संकल्प है कि इन प्रयासों को कभी भी नहीं छोड़ेंगे और न ही इनसे विमुख होंगे।

समाज को यह समझना होगा कि हम समाज के उत्थान की बात करते हैं। हमारे संवादों में कोई भी नकारात्मकता नहीं होती। इसी कारण हम मारवाड़ी समाज के अंतिम पंक्ति में बैठे लोगों तक पहुँचने के लिए सतत प्रयासरत हैं। कुछ सफलताएं हमने अर्जित की हैं, लेकिन अभी तक संतोषजनक परिणाम सामने नहीं आए हैं।

एक और महत्वपूर्ण बातें सभी समाज सुधारकों, समाज के प्रति चिंतनशील या सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच रखना चाहूँगा कि जब हम समाज के बीच अपनी बातें रखते हैं तब हमें कुरीति, या सामाजिक विकृति जैसे शब्दों को व्यवहार में लाने से

चिट्ठी आई है

बचना चाहिए। हम उनकी जगह सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए अगर कहतें है कि आधुनिक बदलाव या नई परम्पराएं गढ़ने का प्रयास जो आज की युवा पीढ़ी कर रही है वह हमारे लिए हितकारी नहीं हैं। हमारी पौराणिक परम्पराएं एवं मान्यताएं एक सुसंकल्पित समाज की संरचना का द्योतक है, हमे हर हाल में उन परम्पराओं की या मान्यताओं की परिचालक करनी चाहिए। हमें बिखरे हुए नहीं समावेशी समाज की संरचना करनी है और इसके लिए हमारी युवा पीढ़ी को समझना होगा कि हमारा दृष्टिकोण क्या हैं। हम युवा पीढ़ी की भावनाओं की कद्र करते हैं बदले में सिर्फ यही चाहते हैं कि हम फूहड़पन नहीं, बल्कि सामाजिक मान्यता या सामाजिक उत्थान चाहतें हैं।

हम सम्मेलन के कर्मठ सदस्य के रूप में आशावादी हैं कि हमें हर कीमत पर सफलता अर्जित करनी है।

– राजेंद्र हरलालका
शाखाध्यक्ष, बंगाईगांव, असम

समाज के लिए जगाने वाली घन्टी - A Wakeup Call

अतुल की घटना की दर्द से सभी उद्वेलित थे ही कि एक और घटना में जिसमें पुलिस के एक सिपाही ने भी अपनी जान ले ली। हुलीमावु पुलिस स्टेशन के ३३ वर्षीय पुलिस हेड कांस्टेबल ने शुक्रवार देर रात बायप्पनहल्ली में ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली। अपने सुसाइड नोट में उसने भी, पत्नी और ससुर पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

यह तो अतुल ने अपना वीडियो व नोट सोसल मीडिया में दे दिया नहीं तो उसकी मौत की खबर भी गुमनाम अंधेरे में ही रह जाती। ध्यान देने की बात है कि सरकारी डेटा के अनुसार पुरुषो की आत्महत्या की संख्या लगातार बढ़ रही हैं।

अब भी समाज की आंखे नहीं खुली तो भविष्य और भी भयावह होने वाला है। समाज को इस बारे में सोचने की आवश्यकता है। पुरुष द्वारा महिला के प्रति अत्याचार पर हर कोई आकर आक्रोश प्रकट करता है, पर वही महिला द्वारा पुरुष के प्रति अत्याचार हो तब समाज मे सन्नाटा रहता है। सरकार, कानून, समाज सभी पुरुष के प्रति हो रहे अत्याचार के खिलाफ मौन ही रहते हैं तथा संवेदन शील भी नहीं हैं।

वर्तमान स्थिति में जब कानून, समाज, सरकार सभी जेंडर इक्वलिटी की बात करते है तब यह दोहरा मापदण्ड नहीं होना चाहिए। समाज में सभी की सुरक्षा हो यह सरकार द्वारा कानून द्वारा यह सुनिश्चित होना चाहिए।

अब लगता है भविष्य में विवाह से पहले कानूनी ज्ञाताओं से विवाह सम्बन्धी सलाह लेने की जरूरत आन पड़ेगी। मुस्लिम धर्म में निकाह नामा की तरह हमारे समाज में भी शादी का समझौता बनाने की जरूरत होगी। काफी देशों में special marriage agreement होते हैं। यह विचारणीय विषय है। इससे शायद तलाक की स्थिति में बच्चो की कस्टडी, मेंटेनेंस की रकम, काम काजी महिला होने पर मेंन्टेनेंस देने का दायित्व महिला का भी हो सकता है, आदि आदि पहले से निर्धारित होने पर झूठे मुकदमे आदि से बचा जा सकता है। सम्बंधित परिवार एग्रीमेंट अनुसार अपने मसले सुलझा सकते हैं।

– राज कुमार सराफ
नार्थ लखीमपुर

सामाजिक चेतना - एक चिंतन

सरकार द्वारा किसी खास वर्ग को दी गई लॉ में विशेष प्रोटेक्शन को हथियार बनाकर अन्य वर्ग के साथ क्रूरता करना आज आम बात हो गई है। लॉ के प्रावधान को समाज की भलाई की जगह इस्तेमाल की जगह इसे ब्लैकमेल, एक्सटॉर्शन का हथियार बनाया जा रहा है। यह हमनें SC ST के लोगों की मान सम्मान की सुरक्षा के लिए बनाये गए लॉ के प्रोविजन का गलत इस्तेमाल कर विक्टिमहुड बनकर निर्दोष लोगों को व्यक्तिगत दुश्मनी निकालने के लिए इस्तेमाल किया जाने के बहुत से उदाहरण समाचार पत्रों में, न्यूज चैनल पर देखते आ रहे हैं। उसी तरह महिला सुरक्षा के लिए बनाए गए लॉ प्रोविजन का भी बेहिसाब गलत इस्तेमाल समाज के लिए अब संकट बनता जा रहा है। ब्लैकमेल, एक्सटॉर्शन के लिए इसका दुरुपयोग बड़े पैमाने पर होने लगा है। वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट को भी इस मामले में सख्त टिप्पणी करनी पड़ी हैं।

Women Need to Realise That Beneficial Laws Aren't Means To Threaten, Domineer Or Extort From Their Husbands : Supreme Court.

इस तरह के मामले में दोषी कौन हैं। शादी विवाह दो पक्षों का मिलन हैं। यदि यह मिलन दोनों पक्षों के लिए सुखद नहीं हैं दुखदायी हैं तो सम्बन्ध विच्छेद सही हैं। पर इस सम्बद्ध विच्छेद प्रक्रिया को सरल बनाना अब समाज का भी दायित्व बन जाता है। क्या इस प्रक्रिया को सरल बनाया जा सकता है। आज कल तलाकशुदाओं के विवाह सम्बन्ध होते हैं। ज्यादातर लड़कियां/महिलाएं शिक्षित होती हैं। वह अपनी जीविका उपार्जन करने में समर्थ हैं।

सम्बंध विच्छेद के बाद दोनों पक्ष अपनी नई जिंदगी शुरु कर सकते हैं। कोट कचहरी में झूठे मामले दाखिल करना व मानसिक यातना देने के गुर सिखाने में परिवार और वकील भी जिम्मेदार होते हैं। इन लोगों के चलते भी दोनों पक्षों की जिंदगी काफी हद तक नरक बन जाती हैं। सामाजिक संगठनों को अब समाज मे बढ़ती इस नई समस्या की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। युवाओं को कैसे सुखी परिवार गठन की प्रक्रिया में कार्य करना है, विषय पर बृहद चर्चा विभिन्न मंचो पर आरम्भ करनी चाहिए। इन चर्चाओं में युवाओं की भागीदारी हो यह आवश्यक हो।

हमने सम्मेलन के मंच पर बहुत विषयों पर चर्चा होते देखा हैं। कुछ वर्षो से प्रि-वेडिंग व विवाह समारोह में मद्यपान को लेकर चर्चा होती है। पर उन चर्चाओं में युवाओ की भागीदारी न होने के कारण वह चर्चा निष्फल रहती है। वह सारी सामाजिक बीमारियाँ समाज मे ज्यों की त्यों विराजमान है। कम होने का नाम नही ले रही हैं।

समाज में युवाओं की भागीदारी ६०% है। अतः अब इन सब सामाजिक समस्याओ पर युवा संगठनों को भी बड़े स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। मुझे याद हैं मायुम के पहले राष्ट्रीय अधिवेशन के समय काफी युवाओं ने आगे आकर दहेज न लेने की सौगंध ली थी। उसका कितना प्रभाव पड़ा कहना मुश्किल है, पर वह पहल बहुत ही अच्छी थी। अब फिर सामाजिक समस्या पर सम्मेलन के साथ-साथ अन्य युवा संगठनों को भी इसी तरह कार्य करने की आवश्यकता है, शायद सबका सामूहिक प्रयास कुछ रंग लाये।

– राज कुमार सराफ
नार्थ लखीमपुर

हमारे कई सकारात्मक सामाजिक सुधार के कदम को इतर समाज के लोगों ने स्वीकार किया है।

लेकिन हाल फिलहाल में कुछ नई विकृतियां आई है। वैसे मुद्दों को समाज के समक्ष विचारार्थ सामने लाना चाहिए।

– वीरेंद्र कुमार जालान
अध्यक्ष, मारवाड़ी सम्मेलन, मोतिहारी शाखा

Gulab Chand Kataria
Governor of Punjab
and
Administrator
Union Territory, Chandigarh

Raj Bhavan, Punjab
Chandigarh-160 019

18 दिसंबर, 2024

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ९०वां स्थापना दिवस समारोह दिनांक २५ दिसंबर २०२४ को कोलकाता में आयोजित होने जा रहा है।

मारवाड़ी समाज का देश के व्यापार एवं उद्योग के क्षेत्र के साथ-साथ समाज सेवा एवं अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका और योगदान रहा है। यह समाज देश की प्रगति में निरंतर योगदान देता आ रहा है।

गुवाहाटी प्रवास के दौरान मुझे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियों के बारे में जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। संस्था द्वारा संस्कार और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे उल्लेखनीय कार्य अत्यंत प्रशंसनीय हैं, और इसके समर्पित कार्यकर्ता निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं।

मैं मारवाड़ी सम्मेलन के ९०वें स्थापना दिवस समारोह की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'समाज विकास' के विशेषांक के लिए भी अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(गुलाब चंद कटारिया)

मुख्य मंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ९०वां स्थापना दिवस समारोह कोलकाता में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर सम्मेलन के मासिक मुखपत्र 'समाज विकास' का एक विशेषांक भी प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रवासी मारवाड़ी समुदाय ने अपनी उद्यमिता, परिश्रम, कौशल और व्यवहार से देश और दुनिया में अपनी एक खास पहचान और एक सम्मानजनक स्थान बनाया है। भले ही परंपरागत व्यवसाय हों या स्टार्ट अप या अन्य कोई व्यावसायिक एवं औद्योगिक नवाचार, वे हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। अनेक मारवाड़ी आज कारोबारी जगत के दिग्गजों में शुमार हैं।

मारवाड़ियों ने व्यवसाय के साथ ही सामाजिक सरोकारों के माध्यम से भी राजस्थान का नाम रोशन किया है। यह सराहनीय है कि मारवाड़ी समुदाय अपनी मातृभूमि से दूर रहने के बावजूद अपनी जड़ों और संस्कृति से जुड़ा है। मुझे आशा है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का यह स्थापना दिवस समारोह संगठन के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक उन्नति के प्रयासों को मजबूती प्रदान करेगा।

मैं इस सम्मेलन के आयोजन और विशेषांक के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

बिखरते संयुक्त परिवार

पिछले दिनों कोलकाता में एक प्रतिष्ठित परिवार द्वारा आयोजित एक सामाजिक समारोह में उपस्थित होने का अवसर मिला। इस परिवार के ३० सदस्य संयुक्त रूप से रहकर भारतीय संस्कृति की विशिष्ट भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं एवं समाज मे एक उदाहरण हैं। हमारी संस्कृति ने विश्व को उदारता का पाठ पढ़ाया है। महोपनिषद में कहा गया है :

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
(महोपनिषद्, अध्याय ४, श्लोक ७१)

अर्थात – यह अपना बन्धु हैं और यह अपना बन्धु नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों की तो (सम्पूर्ण) धरती ही परिवार हैं।

विश्व बंधुत्व के साथ-साथ हम विश्व कल्याण की भी बात करते हैं। हमारे यहां यह भी कहा गया है:

ॐ सर्वेषां स्वस्तिर-भवतु।
सर्वेषाम् शान्तिर्-भवतु।
सर्वेषां पूर्ण-भवतु।
सर्वेषाम् मंगलम्-भवतु।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।।

अर्थात– १ः सभी का कल्याण हो, २ः सभी में शांति हो, ३ः सभी में पूर्णता हो, ४ः सभी में शुभता हो, ५ः ओम शांति, शांति, शांति। खासकर कलयुग में एकता पर याद रखने लायक एक विशेष बात भी कही गई है:

त्रेतायां मंत्र-शिक्तश्च, ज्ञानशक्तिः कृते-युगे।
द्वापरे युद्ध-शक्तिश्च, संघशक्ति कलौ युगे।।

अर्थात– सत्ययुग में ज्ञान शक्ति, त्रेता में मन्त्र शक्ति तथा द्वापर में युद्ध शक्ति का बल था। किन्तु कलियुग में संगठन की शक्ति ही प्रधान है।

भारतीय संस्कृति द्वारा प्रतिपादित संयुक्त परिवार उपरोक्त सभी विशेषताओं एवं गुणों को अपने में समाहित करता है। वस्तुतः परिवार अक्सर बिना शर्त प्यार का पर्याय समझा जाता हैं। परिवार का हिस्सा होने का अर्थ होता हैं एक दूसरे के प्रति समर्पित होना। साथ-साथ सुख-दुख आपस में बांटना। दुख बांटकर कम हो जाते हैं और सुख बांट कर कई गुना बढ़ जाते हैं। परिवार हर हाल में एक दूसरे को अटूट साथ एवं समर्थन प्रदान करते हैं। परिवार विश्वास, आराम, प्यार, देखभाल, खुशी एवं अपनेपन को अपने में समाये रहता है। भारत में प्रचलित संयुक्त परिवार विश्व के सामाजिक व्यवस्था के तुलना में एक अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। समाजशास्त्र ने इस व्यवस्था में निहित भावनाओं के लाभ को स्वीकार किया है। संयुक्त वृहद परिवार में दादा दादी, ताऊ ताई, मां-बाप, चाचा चाची, भाई बहन का एक साथ रहना परिवार को विशिष्ट पहचान देता है। सबसे बड़ा लाभ है एकता की शक्ति एवं सुरक्षा का भाव। संयुक्त परिवार में बच्चों को शारीरिक एवं चारित्रिक विकास का अच्छा अवसर मिलता है। माता-पिता के साथ-साथ अन्य सभी का भी प्यार मिलता है। संयुक्त परिवार के सदस्य सहज में ही सहयोग, करुणा, सहानुभूति और सम्मान के मूल्य सीख जाते हैं। इस तरह से हम समझ सकते हैं कि संयुक्त परिवार स्वयं में ही एक श्रेष्ठ शिक्षण संस्थान है। धर्मशास्त्र कहता है - **"जो घर संयुक्त परिवार का पोषक नहीं उसकी शांति एवं समृद्धि सिर्फ एक भ्रम है।"**

आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। इसका मुख्य कारण है कि हमारे सोच में धर्म का महत्व घटता जा रहा है। दो इंसानों की सोच एक नहीं होती। इस सोच को एक करने में धर्म की बड़ी भूमिका रहती है। धार्मिक व्यक्ति में विनम्रता आती है, वह सभी के विचारों का सम्मान करना सीखाता है। वही रूठे हुए को मनाना भी जानता हैं। कलह से कुल का नाश होता हैं और कुलिनता से कुल की वृद्धि। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महाभारत में कौरव पांडव एवं रामायण में चार भाई हैं। महाभारत (उद्योग पर्व : ६१.१४) में महात्मा विदुरजी धृतराष्ट्र को यही बात समझाते हुए कहते हैं : "भरतकुलभूषण धृतराष्ट्र ! जैसे जलते हुए काष्ठ अलग-अलग कर दिये जाने पर जल नहीं पाते, केवल धुआँ देते हैं और परस्पर मिल जाने पर प्रज्वलित हो उठते हैं, उसी प्रकार कुटुम्बीजन आपसी फूट के कारण अलग-अलग रहने पर अशक्त हो जाते हैं तथा परस्पर संगठित होने पर बलवान एवं तेजस्वी होते हैं।"

संयुक्त परिवार में संयुक्त ऊर्जा का संचार होता है संयुक्त ऊर्जा दुखों को खत्म करके सकारात्मक ग्रंथियों को खोलती है। इस संबंध में अथर्व वेद में भी कहा गया है :

।। मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।२।। (३.३०.३)

अर्थात : भाई, भाई से द्वेष न करें, बहन, बहन से द्वेष न करें, समान गति से एक-दूसरे का आदर-सम्मान करते हुए परस्पर मिल-जुलकर कर्मों को करने वाले होकर अथवा एकमत से प्रत्येक कार्य करने वाले होकर भद्रभाव से परिपूर्ण होकर संभाषण करें।

उक्त भावना रखने से कभी गृहकलह नहीं होता और संयुक्त परिवार में रहकर व्यक्ति शांतिमय जीवन जी कर सर्वांगीण उन्नति करता रहता है।

एकता से होने वाले लाभ का पाठ हम चीटियों से भी सीख सकते हैं जो एकता के बल पर अपने से १० गुणा अधिक वजन ढो सकते हैं। एक मामूली तृण भी मिलकर रस्सी बन जाए तो बड़े-बड़े पशुओं को बांधकर रखने की क्षमता पा जाता है। संयुक्त परिवार में माता-पिता का सम्मान करने का अवसर बच्चों को मिलता है।

संयुक्त परिवार में बुजुर्गों के भय या शर्म से युवा व्यसनों से बचे रहते हैं। आज अहंकार एवं ईर्ष्या का स्तर बढ़ता जा रहा है, इस कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। घर के लोग यह समझते हैं कि संयुक्त परिवार में रहने से उनका विकास बाधित हो रहा है। संयुक्त परिवार के वास्तविक स्वरूप को हम इस कहानी से समझ सकते हैं जिसमे एक पिता ने अपने बच्चे को पतंग उड़ाना सीखाना प्रारंभ किया। थोड़ी देर में पतंग आसमान में ऊंची उड़ान भरने लगा। कुछ देर बाद बेटे ने कहा पिताजी ऐसा लगता है कि धागा पतंग को ऊंची उड़ान भरने से रोक रहा है। अगर इसे तोड़ दें तो पतंग और भी ऊंची उड़ान भर सकेगा। पिता ने धागे को काट दिया। पतंग ऊंचाई पर चढ़ने लगा, पर कुछ देर में ही पतंग धीरे-धीरे छत पर आकर गिर गया। बेटे को आश्चर्य हुआ। उसने कहा पिताजी यह क्यों गिर गई। पिता ने कहा बेटा अपने जीवन के शिखर पर हम अक्सर समझते हैं कि कुछ चीज हमें बांधती है और हमें अधिक ऊंचाई प्राप्त करने से रोकती है। जब हमने धागा काटा तो पतंग टूट गई क्योंकि उसे वह सहारा नहीं मिल पाया जो धागा दे रहा था। उसी प्रकार हम समझते हैं कि हम अगर अपने परिवार से कट जाएंगे तो अधिक ऊंचाई प्राप्त कर सकेंगे। किंतु सच्चाई यह है कि परिवार में रहकर हम धैर्य, प्यार, सम्मान सुरक्षा, सद्‌भावना, सहयोग सहज में ही प्राप्त कर लेते हैं। इसके फलस्वरूप जाने अनजाने हमारे चरित्र, व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं जो कि हमें सफलता की नई-नई ऊंचाइयां प्राप्त करवाते हैं। संयुक्त परिवार में आपसी विश्वास, बिना शर्त प्यार की भावना, निरंतर संवाद अति आवश्यक होते हैं। साथ-साथ भोजन, प्रार्थना एवं आमोद प्रमोद आपसी संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में सहायक होते हैं। आजकल अक्सर यह समझा जाता है कि हमारे व्यक्ति के विकास में परिवार की कोई भूमिका नहीं रहती है। इसलिए अहंकार में व्यक्ति अपने परिवार से अलग हो जाता है। इस विषय में एकता की विशेषताओं को हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं।

एक बार हाथ की पाँचों उंगलियों में आपस में झगड़ा हो गया। वे पाँचों खुद को एक दूसरे से बड़ा सिद्ध करने की कोशिश में लगे थे।

अंगूठा बोला की मैं सबसे बड़ा हूँ, उसके पास वाली उंगली बोली मैं सबसे बड़ी हूँ इसी तरह सारे खुद को बड़ा सिद्ध करने में लगे थे जब निर्णय नहीं हो पाया तो वे सब अदालत में गये।

न्यायाधीश ने सारा माजरा सुना और उन पाँचों से बोला की आप लोग सिद्ध करो की कैसे तुम सबसे बड़े हो? अंगूठा बोला मैं सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा हूँ क्यों कि लोग मुझे हस्ताक्षर के स्थान पर प्रयोग करते हैं।

पास वाली उंगली बोली की लोग मुझे किसी इंसान की पहचान के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। उसके पास वाली उंगली ने कहा की आप लोगों ने मुझे नापा नहीं अन्यथा मैं ही सबसे बड़ी हूँ।

उसके पास वाली उंगली बोली मैं सबसे ज्यादा अमीर हूँ क्यूं कि लोग हीरे और जवाहरात और अंगूठी मुझी में पहनते हैं। इसी तरह सभी ने अपनी अलग-अलग प्रसंशा की।

न्यायाधीश ने अब एक रसगुल्ला मँगाया और अंगूठे से कहा की इसे उठाओ, अंगुठे ने भरपूर जोर लगाया लेकिन रसगुल्ले को नहीं उठा सका। इसके बाद सारी उंगलियों ने एक-एक करके कोशिश की लेकिन सभी विफल रहे।

अंत में न्यायाधीश ने सबको मिलकर रसगुल्ला उठाने का आदेश दिया तो झट से सबने मिलकर रसगुल्ला उठा दिया।

न्यायाधीश ने फैसला सुनाया कि तुम सभी एक दूसरे के बिना अधूरे हो और अकेले रहकर तुम्हारी शक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, जबकि संगठित रहकर तुम कठिन से कठिन काम आसानी से कर सकते हो। एकता में बहुत शक्ति होती है। संयुक्त परिवार इसी एकता का एक उदाहरण है। परिवार के सदस्य अलग-अलग रहकर उस रसगुल्ला को उठाने में असमर्थ रहते हैं, फलस्वरूप तनाव, ईर्ष्या एवं अहंकार से ग्रस्त हो जाते हैं। संयुक्त परिवार की कोई सानी नहीं बशर्ते हम कुछ कायदे कानून का हृदय से पालन करें।

१. घर के सभी सदस्य एक दूसरे के बारे में शांतिपूर्ण तरीके से वार्तालाप करें।
२. कम से कम एक बार साथ भोजन करें।
३. किसी भी सदस्य पर अपने विचार नहीं थोपा जाय।
४. अर्थव्यवस्था में सब का योगदान रहे।
५. कुल परंपरा, परिवार के रिवाज का पालन किया जाए।
६. सब अपने अधिकार के साथ-साथ कर्तव्यों का भी पालन करें।
७. दोष ढूंढना आसान होता है पर गुण ढूंढना संतों का काम हैं।
८. आज्ञा देने लायक बनने के लिए पहले आज्ञा पालन करना सीखना होता हैं।
९. परिवार में दूसरों के बॉस बनने का कोशिश ना किया जाए तो ही बेहतर है।
१०. मुखिया एक ट्रस्टी के रूप में परिवार का संचालन करता हैं।
११. आज के माहौल में संयुक्त परिवार में बच्चों एवं युवाओं पर कुछ अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हैं।

परिवार एक समुद्र हैं जिसका हर बूंद महत्वपूर्ण होता हैं। पैसा कमाने का सबसे बड़ा आनंद तभी हैं जब हम उस धन को परिवार के साथ बांट सके। एक चरित्रवान व्यक्ति के निर्माण के पीछे उसके परिवार के संस्कार होते हैं। कलह और लालच परिवार के दुश्मन है। परिवार एक मधुर संगीत हैं जो हमें आनंदित करता है। ऋग्वेद (१०/१८१/२) की इस ऋचा को हमें सदैव याद रखना चाहिए –

सं गच्छध्वम सं बदध्वम

साथ चले, मिलकर बोले। उसी सनातन मार्ग का अनुसरण करो जिस पर पूर्वज चले हैं।

हमने पश्चात जगत से एकल परिवार का चलन सीखा हैं अब वभी संयुक्त परिवार की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

संस्कार-संस्कृति चेतना कार्यक्रम को अभियान बनायें

संस्कार के बिना समाज की कल्पना नही की जा सकती। मानव के समूह मात्र को ही समाज नही कहते। सभ्य एवं संस्कारी समाज ही समाज कहलाने का हकदार हैं। कहा गया है – "मनुष्यः कस्मात् मत्वा कर्माणि सीख्यति" अर्थात मनुष्य तभी मनुष्य है जब तक वह किसी कर्म को चिन्तन तथा मनन पूर्वक करता है। यही मनन की प्रवृत्ति मनुष्यता की परिचायक है अथवा मनुष्य भी उस पशु के समान ही है जो केवल देखता है और बिना चिन्तन मनन के विषय मे प्रवृत्त हो जाता है।

भारतीय समाज सदियों से संस्कारों से परिपूर्ण था। लोग संयुक्त परिवार में रहते थे। संयुक्त परिवार में सभी बच्चे सभी संस्कारो से अच्छी तरह परिचित हो जाते थे। सीमित काल और सीमित संसाधनों के बावजूद परिवार में सभी मिलजुल कर रहते थे एवं मर्यादित संस्कारित जीवन जीते थे। समय के साथ परिवर्तन अवश्यम्भावी है। किन्तु यह परिवर्तन हमारे नैतिक मूल्यों एवं संस्कारो को ताक पर रख कर हो रहा हो तो, यह चिंता का विषय है। संस्कारो का व्यक्ति के साथ वही संबंध है जैसा जल का जमीन के साथ। हम जीवन को गहराई मे जाकर देखते है तो बोध होता है कि हर व्यक्ति अन्ततः संस्कारो का ही पुतला है। वास्तव में एक जन्म का नहीं व्यक्ति अनेक जन्मों के संस्कारों से परिपूर्ण रहता है, ऐसी हमारी मान्यता है। महावीर के जन्म जन्मांतर से सन्यास के संस्कार थे। यौवन काल आने पर उनके माता पिता ने बहुत मना किया, भोग-विलास के हर सुविधा को मुहैया करवाया। इसके बावजूद पूर्व जन्म के संस्कार प्रभावी रहे और वे सन्यास लेकर अरिहंत बन गये।

संस्कारो के द्वारा ही मनुष्य का चरित्र निर्माण होता हैं। चरित्र ही वह धुरी हैं, जिस पर मनुष्य का जीवन सुख, शांति और मान सम्मान को प्राप्त करता है।

यह स्पष्ट है कि सुविधाएँ बढ़ रही है, संस्कारो का ह्रास हो रहा है। हम यह भूल गये कि संस्कार के बिना सुविधा देना पतन का कारण होता हैं। आज की स्थिति पर नजर दौड़ाए तो हम पायेंगे कि घर बड़े हो गये हैं परिवार छिन्न-भिन्न, पढ़ाईयाँ ऊँची होती जा रही है, तमीज घटता जा रहा है, दवाईयाँ एवं ईलाज महंगा होता जा रहा है – सेहत कमजोर होता जा रहा है, आमदनी बढ़ रही है - शांति घट रही है, जानकारी बढ़ रही है, बुद्धि प्रयोग घट रहा है, जीवन यात्रा की रफ्तार इतनी बढ़ गई है कि सुबह की बात शाम तक भूला दी जाती है, मानव का भौतिक कद बढ़ रहा है, इंसानियत कम हो रही है, संबंधो का महत्व घट रहा है, शराब अब पानी की तरह बह रहा है। परिवार में संबंधो में तनाव आम बात हो गई है। विवाह विलम्ब से होते हैं - तलाक चट-पट हो रहे है। आये दिन आपसी घृणा, द्वेष, हिंसा के वारदात बढ़ रहे है। आधुनिकता के नाम पर नग्नता एवं अमर्यादित जीवन शैली सिर पर चढ़ कर बोल रही है। आंतरिक सत्ता का मूल्य बोध सजावट, बनावट दिखावट के चकाचौक मे धूमिल हो रहे हैं। दो लाइनों में कहा जा सकता है –

गिर गई हैं समाज की कद्र
चढ़ गया हैं आदमी बुलंदी पर

पारिवारिक संबंधो के विषय में यह बात आज के माहौल में उपयुक्त लगती है - पहले पड़ोसी भी परिवार का ही अंग होते थे, अब तो एक घर मे ही कितने पड़ोसी रहते है। पहले एक कमरे में आठ व्यक्ति का रह लेते थे अब सबको अलग अलग कमरे चाहिये। चाचा-चाची, दादा-दादी, मौसा-मौसी, बुवा-फूफा, ताऊ-ताई आदि सभी संबंध अंकल-आंटी मे सिमट कर रह गये है। घरवालो के विषय में बाहर वालों से राय ली जाती है।

हमें यह याद रखना चाहिए कि सब कुछ कॉपी हो सकता हैं, लेकिन चरित्र, व्यवहार, संस्कार और ज्ञान नहीं। गाड़ी में अगर ब्रेक न हो तो दुर्घटना निश्चित है, जीवन में संस्कार और मर्यादा न हो तो पतन निश्चित है। किसी ने ठीक ही कहा है –

पटरी से उतरते ही खत्म हो जाती है
रेल और जिन्दगी कितनी एक सी है।

इसीलिये हमारे धर्म एवं संस्कृति में गर्माधान से ही संस्कारो की बात कही गई है। पहले समाज में इसकी मान्यता भी थी। पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार शिशु का मानसिक विकास गर्भ में ही शुरु हो जाता है। विज्ञान

ने भी सदियों पुरानी इस मान्यता को स्वीकार किया हैं। रिसर्च के अनुसार शिशु का मस्तिष्क विकास पच्चास फीसदी गर्भ के अंदर हो जाता हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार गर्भ से ही शिशु को अच्छी शिक्षा देनी शुरु कर देनी चाहिए। महाभारत में अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने मां के गर्भ में ही युद्ध की नीतियाँ सीख ली थी। मां के धार्मिक किताबें पढ़ने पर बच्चे भी इसकी आवाज सुनते है। गर्भ में सात महीने के होने के बाद शिशु मां की आवाज सुनने लगता है। इसलिये गर्भवती मां अगर धार्मिक कथा पढ़ेगी तो इसका असर बच्चे पर भी पड़ेगा। बच्चे में सकारात्मक विचार और भावनाएँ आती है। अतएव बच्चों को संस्कारित करने में प्रथम दायित्व मां का होता है। आज भी स्थिति का मुकाबला हम नये बच्चों में संस्कार देकर ही कर सकते है।

कमाकर बच्चों को न धन अपार दीजिये
बच्चे आपका भविष्य हैं अच्छे संस्कार दीजिए।
बनना बिगड़ना इनका आपके ही हाथों में है
ये मिट्टी अभी गिली हैं, सही आकार दीजिये।

जापान में विद्यालयों को कक्षा तीन तक किसी भी प्रकार की परिक्षा नही देनी पड़ती। उनका मानना है कि बच्चों के जीवन के प्रथम आठ वर्षो तक उनके ज्ञान का आंकलन करने की जगह हम उन्हें सही शिष्टाचार एवं चरित्र निर्माण करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।

आज समाज धन की अंधी दौड़ में लगा हुआ हैं। हम उस बात को भूल जाते है जिसमें कहा गया है कि जब धन जाता है तो कुछ नही जाता, जब स्वास्थ्य खोता हैं तो कुछ खोता हैं किन्तु जब चरित्र खो जाता हैं तो सब कुछ खो जाता हैं। आज लोगों को वृद्धाश्रम में इसलिये जाना पड़ रहा हैं कि जब समय था तब उन्होंने बच्चों में संस्कार संस्कृति नहीं दिया।

आज इस विकट स्थिति से उबरने का एक ही रास्ता हैं कि नई पीढ़ी में प्रारम्भ से ही संस्कार देने के अथक प्रयास किये जाय। इसके लिये अभिभावकों को सचेत होना होगा। आज का अभिभावक कठघरे में खड़ा हैं। अभिभावकों की यह बड़ी भूल है अगर वे यह समझते हैं कि बच्चे कुछ समझते नहीं। बच्चे बहुत अच्छे पर्यवेक्षक होते हैं। अच्छे संस्कार किसी मॉल से नहीं, परिवार के माहौल से मिलते हैं। बच्चों को सदैव अच्छे कर्म करने के लिये प्रेरित करना चाहिए।

संस्कारों से संबंधित एक लोक कथा प्रचलित हैं। इस कथा के अनुसार पुराने समय में एक संत अपने शिष्य के साथ एक गांव में भिक्षा मांग रहे थे। इस दौरान वे एक घर के बाहर पहुंचे। उन्होंने भिक्षा के लिए आवाज लगाई तो अंदर से एक छोटी बच्ची बाहर आई। बच्ची ने संत से कहा कि हमारे पास आपको देने को कुछ नहीं हैं। संत ने कहा कि बेटी, मना मत कर, कुछ नहीं है तो अपने आंगन की थोड़ी सी मिट्टी ही दान में दे दो। छोटी बच्ची ने तुरंत ही आंगन से एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और भिक्षा पात्र में डाल दी। संत ने बच्चो को आशीर्वाद दिया और आगे बढ़ गए। कुछ दूर चलने के बाद शिष्य ने संत से पूछा कि गुरुजी आपने भिक्षा में मिट्टी क्यों ली? ये तो हमारे किसी काम की नहीं है। संत ने शिष्य को समझाया कि आज वह कन्या छोटी हैं और अगर वह अभी से मना करना सीख जाएगी तो बड़ी होकर भी किसी को दान नहीं देगी। आज उसने दान में थोड़ी सी मिट्टी दी हैं, इससे उसके मन में दान देने की भावना जागेगी। भविष्य में जब वह बड़ी होकर सामर्थ्यवान बनेगी तो फल-फूल और धन भी दान में देगी।

जो परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं उसके लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं एवं इसका निवारण भी हमें स्वयं ही करना होगा। इस विषय में मंथन करने पर यह सोचा गया कि घर में शिशुओं में प्रथम से ही संस्कार संस्कृति के कुछ सरल एवं मूलभूत बिंदुओं को उनके जीवन में अगर उतारने का प्रयास किया जाए तो आने वाली संतति का संस्कारित रहने की संभावना प्रबल होगी। ये बिंदु है :

१) प्रारंभ से ही बच्चों का विद्यालय जाने से पहले स्नान करना।
२) स्नानोपरांत संक्षिप्त प्रार्थना।
३) त्योहारों एवं सभी मांगलिक अवसरों पर घर के बड़ों के पाँव छूकर प्रणाम करना।
४) गीता एवं रामायण का अध्ययन करना एवं उनकी कहानी पढ़ना।
५) स्तुति/मंत्र कंठस्थ करना।
६) भारतीय महापुरुषों की जीवनी पढ़ना।
७) घर में मारवाड़ी में बात करना।
८) हाय हेलो, बाय-बाय, गुड मॉर्निंग की जगह राम-राम, राधे-राधे का प्रयोग करना।
९) यथा संभव सप्ताह में एक बार मंदिर जाने की आदत डालना व त्योहारों पर पारंपरिक वेश-भूषा में परिवार के साथ मंदिर जरुर से जरुर जाना साथ ही रास्ते में त्योहारों के अतीत की कहानी को सुनना एवं सुनाना।
१०) सभी अभिभावक अपने आचरण के प्रति सजग रहे ताकि बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।
११) नवजात शिशु को मम्मी पापा की जगह माँ बाबूजी कहने की आदत डालना।

मेरा यह विनम्र आग्रह है कि सम्मेलन के संस्कार संस्कृति चेतना कार्यक्रम को एक अभियान में परिवर्तित करने के लिए सब मिलकर हर संभव प्रयास करें। शाखा, प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इस संबंध में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को हर संभव प्रयास कराना हमारा पवित्र कर्तव्य है।

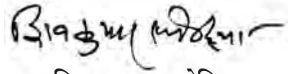

शिव कुमार लोहिया

manipalhospitals
LIFE'S ON

KOLKATA, LET YOUR HEART BEAT STRONGER.

Avail Comprehensive Cardiac Care at Manipal Hospital Kolkata.

500+ Critical Care Beds | 1,50,000 Coronary Angiographies | 75,000 Angioplasties | 50,000 Cardiac Surgeries

Call on
033 6680 0000
info@manipalhospitals.com

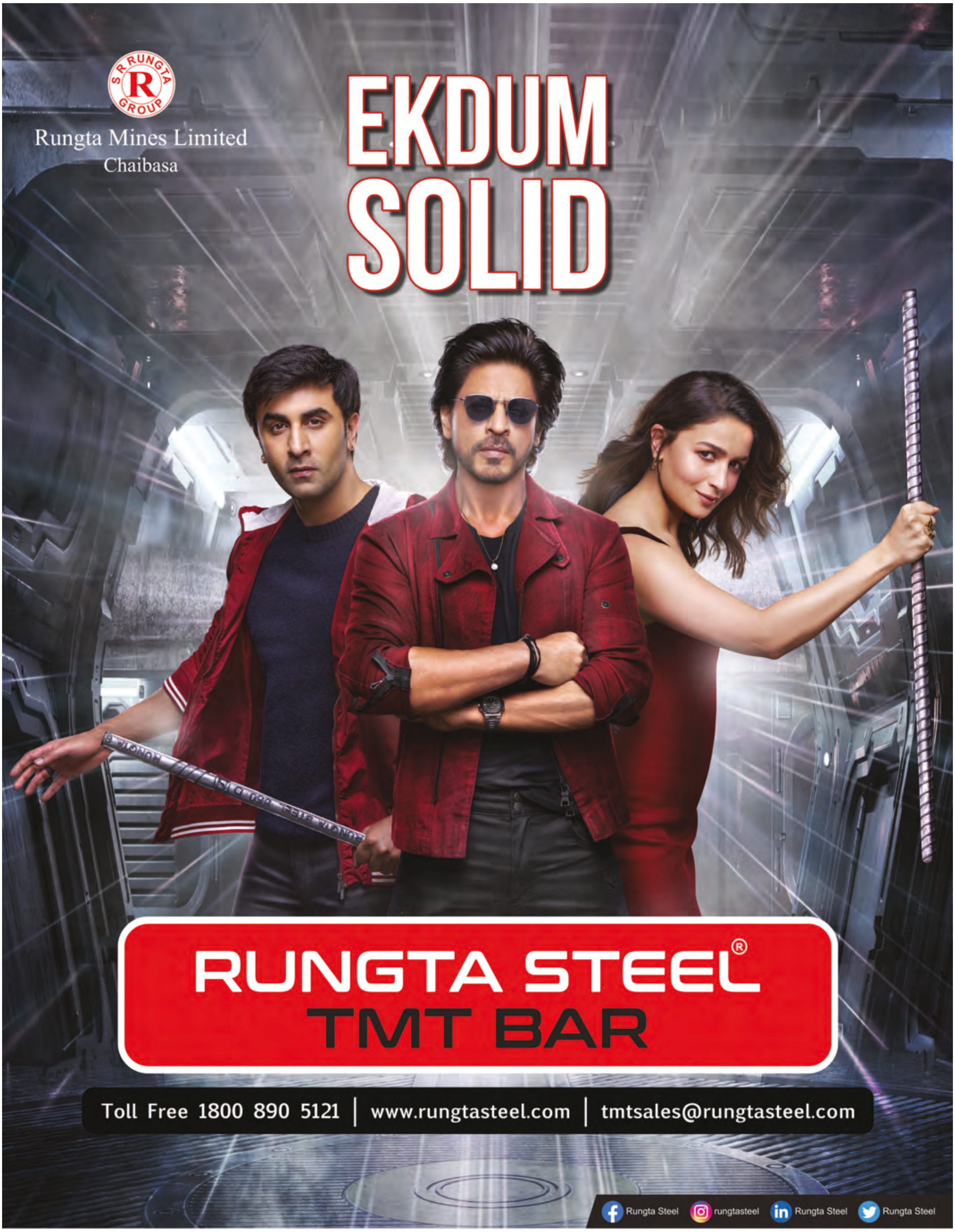

Rungta Office, Nagpur Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand-833201

सामाजिक विसंगतियों को दूर करने समाज एकजुट हो : शिवकुमार लोहिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९०वाँ स्थापना दिवस समारोह का आयोजन स्थानीय जी. डी. बिरला सभागार में हुआ। इस अवसर पर उद्घाटनकर्ता एवं मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा विश्व के कोने-कोने में बसे मारवाड़ी समाज के बंधु अपनी योग्यता क्षमता एवं ऊर्जा के बलबूते पर अपनी उपस्थिति एवं अस्तित्व को दर्ज कराया है। साथ ही साथ राजस्थान की माटी की सौंधी महक से संपूर्ण विश्व को महकाया है। मारवाड़ी समाज का धैर्य, आत्मविश्वास, आगे बढ़ने की इच्छा एवं परोपकार की भावना वास्तविक में वंदनीय है। राजस्थान में कहावत है कि आलू टमाटर और मरवाड़ी सब एक से हैं; यह विश्व में हर जगह पाए जाते हैं। उन्होंने कहा समाज में युवा पीढ़ी के लिए संस्कार एवं संस्कृति अति आवश्यक है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया ने कहा कि जिस प्रकार मारवाड़ी समाज के डीएनए में व्यापार एवं समाज सेवा, उसी प्रकार सम्मेलन के डीएनए में समाज सुधार हैं। सम्मेलन का पांच सूत्रीय कार्यक्रम हैं जिसमें प्रमुख हैं संस्कार संस्कृति चेतना एवं समाज सुधार एवं **आपणो समाज-एक समाज-श्रेष्ठ समाज**। समाज के सभी घटकों को अपने सभी रकम की दूरियां पाटकर एकजुट होने की आवश्यकता हैं और सम्मेलन की स्थापनाकाल से ही हम उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। आज समाज में नई-नई विसंगतियाँ एवं कुरीतियाँ पैदा हो रही है। यह एक चिंताजनक स्थिति है। आज की युवा पीढ़ी में मूल्य बोध का अभाव दिख रहा है। भविष्य के लिए बहुत ही चिंतनीय विषय है। साथ ही साथ समाज में अनेक जगह देखा जाता है कि जागरूकता भी बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि मेरा यह दृढ़ विश्वास हैं कि सतत प्रयास एवं कर्म से हम इस बिगड़ी स्थिति को भी सुधार कर पटरी पर लाने के लिए काम कर सकते हैं। उन्होंने मांगलिक समारोह में मद्यपान प्री-वेडिंग सूट का प्रदर्शन एवं सड़कों पर महिलाओं का शादी विवाह के अवसर पर नृत्य के विषय में चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा की नई पीढ़ी पश्चात सभ्यता की अंधी नकल करने में लगी है। उन्हें हमारे संस्कार और संस्कृति की विशेषता को तार्किक तरीके से समझा करके उन्हें फिर से इस ओर लाना होगा जब तक हमारी मातृभाषा को हम अपने परिवार में नहीं स्थापित करेंगे तब तक हमारे संस्कार एवं संस्कृति बच नहीं सकती। उन्होंने सभी समाज बंधुओं को आवाहन किया कि सम्मेलन से जुड़े, सम्मेलन की कार्यक्रमों से जुड़े एवं समाज को नई दिशा देने में अपना योगदान दें। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला ने सम्मेलन के इतिहास को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया एवं कहा कि आज की युवा पीढ़ी हालांकि काफी प्रगतिशील है; साथ ही साथ उन्हें हमारे संस्कारों के विषय में भी जानकारी देना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने घोषणा कि की प्रवीण उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री वेणुगोपाल बांगड़ को राजस्थानी व्यक्तित्व पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सम्मेलन सदैव से ही समाज सुधार के लिए जाना जाता है। मुझे इस बात की खुशी है कि समाज सुधार का कार्यक्रम अभी भी चलाया जा रहा है। उन्होंने पश्चिम बंगाल में एक राजस्थान भवन स्थापित करने की बात कही।

कार्यक्रम के आरंभ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिनेश जैन ने स्वागत भाषण

दिया एवं धन्यवाद ज्ञापन किया राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष केदारनाथ गुप्ता ने। राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया एवं सम्मेलन की वर्तमान सत्र की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर सम्मेलन की मासिक पत्रिका **'समाज विकास'** का विशेषांक विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी के कर कमलो द्वारा संपन्न हुआ।

समारोह में समाज के गणमान्य व्यक्ति बड़ी संख्या में उपस्थित थे जिनमें पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नंद लाल रूँगटा, डॉ. हरि प्रसाद कानोड़िया, रामअवतार पोद्दार, एवं संतोष सराफ, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका एवं संजय हरलालका, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री संजय गोयनका, पवन जालान, आत्माराम सोंथालिया, हरिप्रसाद बुधिया, राजेन्द्र खंडेलवाल, अरुण गाड़ोदिया, राजेश सोंथालिया, अरुण प्रकाश मलावत, अनिल मलावत, कुंज बिहारी अग्रवाल, संदीप गर्ग, विश्वनाथ भुवालका, नंद किशोर अग्रवाल, लक्ष्मीपत भुतोड़िया, विमल केजरीवाल, शिवरतन फोगला, राजेश ककरानिया, पवन बंसल, सजन बेरीवाल, प्रमोद जैन, अनिल डालमिया, सुषमा अग्रवाल, सतीश लाखोटिया, अनूप अग्रवाल, राजेश सिंघल, रमेश बजाज, सजन शर्मा, पवन जैन, शंकरलाल कारीवाल, बी डी मूंधड़ा, अशोक संचेती आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में कोलकाता की सांस्कृतिक संस्था **'मरुधारा'** द्वारा एक नाटक **'उळइयाँ ई सुळझै'** प्रस्तुत किया गया जो कि राजस्थान रत्न से सम्मानित **पद्मश्री विजय नाथ देथा** की कहानियों पर आधारित था। नाटक का मंचन मारवाड़ी भाषा में किया गया जिसे सभी श्रोताओं ने सराहा।

झलकियाँ

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक

सम्मेलन के पंच सूत्रीय कार्यक्रम शाखा स्तर से लागू : शिव कुमार लोहिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक सम्मेलन सभागार में संपन्न हुई। इस बैठक में जूम के द्वारा देश के अनेक प्रांतो के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिव कुमार लोहिया ने सम्मेलन की गतिविधियों के ऊपर में प्रकाश डाला एवं कहा कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य **समाज सुधार** और **संस्कृति-संस्कार-चेतना** है। इस विषय में उन्होंने एक विस्तृत दिशा-निर्देश की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने सभी प्रांतो से आग्रह किया कि यह कार्यक्रम सभी शाखा स्तर पर लागू होना चाहिए। उन्होंने प्रांतो की गतिविधियों के विषय में बताया कि सम्मेलन के मुख्य कार्यक्रम के साथ जुड़ना चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि घोषित किए गए **पंच सूत्रीय** कार्यक्रम पर जोर देने की आवश्यकता है। उन्होंने स्थापना दिवस पर कोलकाता में आयोजित समारोह की अपार सफलता के लिए सदस्यों को बधाई एवं धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि सभी प्रांतों से भी स्थापना दिवस पालन के समाचार लगातार आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि हाल ही में अरुणाचल प्रदेश में भी एक नई शाखा खुलने का समाचार आया है। उन्होंने कहा हमे इस सत्र में सम्मेलन का नारा **आपणो समाज-एक समाज-श्रेष्ठ समाज** को सफल बनाने के लिए सभी संभव प्रयास करने चाहिए। उन्होंने सभी सदस्यों से सम्मेलन के सोशल मीडिया पेज से जुड़ने का निवेदन किया। उन्होंने बताया कि यह हर्ष का विषय हैं सम्मेलन भवन निर्माण संबंधी कार्य में अग्रगति हो रही है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्द लाल रूंगटा ने सुझाव दिया कि सभी प्रांतो को न्यूनतम कार्यक्रम क्रियान्वयन करना चाहिए एवं सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य के अनुरूप अपनी गतिविधियों को संचालित करना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि सभी राज्यों में कम से कम पांच शाखाएं होना अनिवार्य होना चाहिए। उन्होंने स्वर्गीय नंदकिशोर जालान की स्मृति में सांगठनिक पुरस्कार के विषय में भी सुझाव दिए। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार ने प्रांतो में चुनाव के विषय में अपने सुझाव दिए। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सराफ शिक्षा एवं भवन निर्माण के संबंध में सदस्यों को जानकारी दी।

उन्होंने कहा प्रांतो के विकास के माध्यम से ही सम्मेलन का विकास संभव है। उन्होंने वर्तमान सत्र के कार्यक्रमों पर संतोष प्रकट किया।

राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी ने सम्मेलन की गतिविधियों की रपट प्रस्तुत की। राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण राष्ट्रीय दिनेश जैन, राजकुमार केडिया, निर्मल कुमार झुनझुनवाला, मधुसूदन सिकरिया ने विभिन्न प्रांतो की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। प्रांतीय अध्यक्षगण नंदकिशोर अग्रवाल, बसंत मित्तल, राम प्रसाद भंडारी, सीताराम अग्रवाल ने क्रमशः पश्चिम बंगाल, झारखंड तेलंगाना, कर्नाटक की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। दिल्ली प्रांत के सचिव सुंदरलाल शर्मा ने अपनी रपट प्रस्तुत की। पवन गोयनका ने हाल ही में अपनी केरल प्रांत यात्रा के विषय में रपट प्रस्तुत की। राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री पवन जालान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा में डॉ. सुभाष अग्रवाल, संजय गोयनका, पवन बंसल, आत्माराम सोंथलिया, रघुनाथ झुनझुनवाला, जुगल किशोर जाजोदिया, नंदलाल सिंघानिया, नारायण प्रसाद डालमिया, रमेश बंग, विजय गोयल, विश्वनाथ भुवालका, मोहनलाल बजाज, विकाश खंडेलवाल, ओमप्रकाश खंडेलवाल, पवन टिबड़ेवाल, सुषमा अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

सम्मेलन समाचार

राष्ट्रीय महामंत्री का महाराष्ट्र दौरा

राष्ट्रीय पदाधिकारियों के प्रांतीय दौरों की श्रृंखला में राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी के ११ जनवरी २०२५, शनिवार को महाराष्ट्र प्रांत के जालना आगमन पर प्रांतीय अध्यक्ष श्री निकेश गुप्ता एवं प्रांतीय पदाधिकारीयों द्वारा स्वागत एवं सम्मान किया गया।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की जालना शाखा व जिला जालना, मारवाड़ी युवा मंच जालना व जालना सकल समाज एवं महाराष्ट्र मारवाड़ी चैरिटेबल फाउंडेशन

जालना के तत्वाधान में १०-११ जनवरी २०२५ को जालना स्थित श्रीमती दानकुंवर महिला कॉलेज में संयुक्त दो दिवसीय सामाजिक सम्मान समारोह 'पधारो म्हारा देश' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह के उद्‌घाटनकर्ता राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री हरिभाऊ बागड़े, मुख्य अतिथि के तौर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी, राज्यसभा सांसद डॉ. भागवत कराड़ एवं अन्य सम्मानित एवं विशेष अतिथि उपस्थित थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी द्वारा राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री हरिभाऊ बागड़े से मुलाकात की एवं उन्हें शाल ओढ़ाकर उनको सम्मानित किया एवं उनको सम्मेलन की ओर से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'समाज विकास' एवं राजस्थानी व्याकरण की किताब भेंट की। साथ ही सम्मेलन एवं सम्मेलन की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के बारे में महामहिम राज्यपाल महोदय को अवगत कराया।

उक्त समारोह में विधायक अर्जुन खोतकर, वधायक बबनराव लोणीकर, विधायक नारायण कुचे, विधायक अनुराधा चौहान, पूर्व मंत्री एवं निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष श्री राज पुरोहित, पूर्व विधायक शकुंतला शर्मा, पूर्व प्रांतीय महामंत्री श्री वीरेंद्र धोका, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री उमेश पंचारिया, जिलाध्यक्ष जालना श्री सुभाष देवीदान, शहरीध्यक्ष जालना श्री शरद काबरा, जालना युवा मंच अध्यक्ष श्री महेश भक्कड़, श्री पन्नालाल बगड़िया, श्री घनश्यामदास गोयल, श्री सीताराम शर्मा, श्री संतोष धोका, श्री प्रितेष मालपानी, श्री संजय राठी, मनीष तवरवाला, महावीर जांगिड़, महेंद्र गुप्ता, श्री पियूष होलानी, श्री अनुराग अग्रवाल सहित मारवाड़ी समाज से सैकड़ो की संख्या में महिलाएं एवं पुरुषों की उपस्थिति रही।

प्रांतीय अध्यक्ष का सम्मान

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया एवं प्रांतीय उपाध्यक्ष सज्जन शर्मा का सम्मेलन के ९०वें स्थापना दिवस समारोह, कोलकाता में शामिल होने हेतु मारवाड़ी सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय में आगमन पर राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया, राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष केदारनाथ गुप्ता ने दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मान किया। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने दिल्ली प्रांत की गतिविधियों, संगठन विस्तार एवं सम्मेलन द्वारा किए जा रहे कार्यों पर विस्तार से चर्चा की।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय कोलकाता में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विकास अग्रवाल, दिल्ली के पधारने पर उनका स्वागत एवं सम्मान करते सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी एवं वित्तीय उपसमिति के चेयरमैन आत्माराम सोंथलिया।

मोरनहाट शाखा द्वारा स्थापना दिवस का पालन

२५ दिसंबर २०२४ बुधवार को मोरनहाट शाखा के आतिथ्य में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के साथ साथ अपनी शाखा का स्थापना दिवस समारोह का सफल आयोजन श्री राधाकृष्ण विवाह भवन परिसर में किया गया।

कार्यवाहक अध्यक्ष विजय मोर द्वारा अध्यक्षता की गई। सचिव छगनलाल माड़ोदिया द्वारा स्वागत भाषण तथा सभा की उद्देश्य व्याख्या की गई।

श्री सत्यनारायण बेड़िया, श्री रामवतार अग्रवाल, ओमप्रकाश गाड़ोदिया के कर कमलों से दीप प्रज्वलित करते हुए समारोह का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात असम के जातीय संगीत - **ओ मूर आपुनार देश** - का गायन किया गया।

सहसचिव पवन मोर द्वारा अभिनंदन कार्यक्रम का संचालन किया गया जिसमें पहले मोरनहाट शाखा के पूर्व अध्यक्ष ओमप्रकाश गाड़ोदिया, सांवरमल मोर, अशोक पसारी, प्रांतीय संगठन मंत्री बिमल अग्रवाल, प्रांतीय सहायक मंत्री बिरेन अग्रवाल, समाजबंधु ओम जैन, मारवाड़ी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती सुनीता विजय मोर तथा सुंदरकांड परिवार के अध्यक्ष सुशील बेड़ीया को दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया गया। विशेष सम्मान के तहत सम्मेलन के पूर्व सचिव रह चुके समाजबंधु श्री रामवतार अग्रवाल को प्रशस्ति पत्र देकर, साफा और फुलम गमछा पहनाकर उनको अलंकृत किया गया। प्रशस्ति पत्र में आपको - **"शाखा धरोहर"** के खिताब से सम्मानित किया गया।

विशेष सम्मान की कड़ी में समाज के वरिष्ठ समाज बंधु श्री सत्यनारायण बेड़िया को उनकी सामाजिक, धार्मिक तथा अन्यान्य क्षेत्रों में योगदान को मान्यता दिया गया। **आपको - "शाखा गौरव"** से अलंकृत किया गया।

रामवतार अग्रवाल ने इस सम्मान हेतु शाखा परिवार का आभार व्यक्त करते हुए ८०/९० के दशक के अपने अनुभव शेयर किया। सत्यनारायण बेड़िया ने शाखा परिवार की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए इसे यू हीं सक्रिय बनाए रखने का आग्रह किया तथा समाज हित हेतु कार्य करते रहने का आह्वान किया।

अगली कड़ी में सामाजिक कुरीतियों पर चर्चा प्रारंभ की गई। इस परिप्रेक्ष्य में वक्ता के रूप में - बिमल अग्रवाल, प्रसन पसाही, सत्यनारायण बेड़िया, अशोक बेड़िया, श्रीमती कांता गाड़ोदिया, श्री ओम जैन, श्री धर्मेश पारीक, श्रीमती सुनिता विजय मोर, श्री बिरेन अग्रवाल इत्यादि ने इन समस्याओं पर चिंता व्यक्त करते हुए इनके निराकरण हेतु अपनी तरफ से समाधान शेयर किए। बिमलजी ने अपने वक्तव्य में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के संगठन से लेकर अब तक के सफर पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जब जब समाज पर आघात हुआ है तो संगठन ने समाज हित में सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखा है। ये बात अलग है कि संगठन कब कब क्या क्या करता है उसका खुलासा करना उचित नहीं समझता है ताकि समाज को अनावश्यक दबाव न झेलना पड़े।

अध्यक्ष महोदय द्वारा आयोजन में सहभागिता निभाने हेतु मारवाड़ी महिला सम्मेलन प्रतिनिधियों, युवा मंच प्रतिनिधियों, सुंदरकांड प्रतिनिधियों, विवाह भवन समिति प्रतिनिधियों, समाज बंधुओं, मातृ शक्ति और सम्मेलन परिवार के साथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

नंगाव में स्थापना दिवस का पालन

मारवाड़ी सम्मेलन नगांव शाखा ने सम्मेलन का ९०वां स्थापना दिवस का पालन दीप प्रज्वलित एवं झंडोत्तोलन के साथ किया। इसके अंतर्गत नगांव के धिंग रोड स्थित स्वर्गीय मेघराज अग्रवाल स्मृति भवन प्रांगण में मारवाड़ी सम्मेलन का ९०वां स्थापना दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में नगांव के जाने-माने चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉक्टर प्रकाश अग्रवाल उपस्थित थे। शाखा सचिव अजय मित्तल ने उपस्थित समाज बंधुओं को संबोधित करते हुए स्थापना दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित कि तथा सम्मेलन के इतिहास के बारे में बताया। अध्यक्ष प्रदीप शोभासरिया ने सर्वप्रथम फुलाम गमछा पहना कर एवं पूर्व शाखा अध्यक्ष पवन गाड़ोदिया ने जापी पहना कर मुख्य अतिथि का अभिनंदन किया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि के कर कमलों से झंडोत्तोलन कर दीप प्रज्वलित के कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। उपस्थित सभी पूर्व अध्यक्ष, सलाहकार एवं अन्य सदस्यों ने भी दीप प्रज्वलन में अपनी सहभागिता निभाई। मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश अग्रवाल ने अपने संबोधन में मारवाड़ी सम्मेलन के द्वारा पूर्व में किए गए कार्यक्रमों की जानकारी सभा के समक्ष रखी। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त सचिव अरुण नागरका द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष बजरंग लाल अग्रवाल, अनिल शर्मा, ललित कोठारी, उपाध्यक्ष अजित माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष मालचंद अग्रवाल के साथ जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद बोथरा, महावीर प्रसाद किला, रतन बगड़िया, दिलीप अग्रवाल, महेश गाड़ोदिया, दिलीप बगड़िया, जगदीश धूत, संजय पोद्दार, मनोज जाजोदिया, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंडलिया उपाध्यक्ष संजय गाड़ोदिया, नगांव राजस्थानी युवक संघ के अध्यक्ष मुकेश पोद्दार, महेश भजनका, नीतू पोद्दार, रिंकू गिदड़ा, दीपा केजरीवाल, लीना कनोई के साथ समाज के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में अल्पाहार के साथ कार्यक्रम समापन हुआ।

कामरूप शाखा द्वारा स्थापना दिवस का पालन

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन, कामरुप शाखा ने अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में माछखुवा आईटीए सेंटर में सम्मान समारोह आयोजित किया। जिसमें समाज में विभिन्न अवदानों के लिए कमला पोद्दार ज्ञान ज्योति फाउंडेशन व तेरापंथ युवक परिषद को विभिन्न शैक्षणिक व सामाजिक सेवा के लिए शॉल व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके अलावा गत कई वर्षों से कुल ९१४ शवों के दाह संस्कार में अपना सक्रिय सहयोग देने वाले सरोज जैन (विनायक्या), एकल अभिनय के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त अभिनेता विवेक जालान, लेखिका व स्तंभकार अंशु सारडा, योगाचार्य शंकर बिल को भी शॉल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित अतिथि के रूप में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. श्याम सुंदर हरलालका, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मधुसूदन सिकरीया, प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा, निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल, प्रांतीय महामंत्री विनोद लोहिया, शाखा अध्यक्ष दिनेश गुप्ता, मंत्री संजय खेतान और कोषाध्यक्ष उमाशंकर गट्टानी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सभी अतिथियों के संबोधन के पश्चात शाखा का मुख्यपत्र कामरूप दर्पण का विमोचन किया गया तथा कामरूप दर्पण में प्रकाशित लेख व कविता के लेखकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा गत दिनों आयोजित लेख, कविता व चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन कंचन शर्मा ने किया। इस समारोह में कामरूप शाखा के संस्थापक अध्यक्ष संपत मिश्र और सचिव मनोज काला को भी स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में गुवाहाटी शाखा के सचिव अशोक सेठिया, साहित्य प्रकाशक घनश्याम लड़िया के अलावा कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

विचार गोष्ठी एवं अभिनंदन समारोह

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९०वें स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में पूर्वोत्तर प्रांत की गुवाहाटी शाखा द्वारा एक विचार गोष्ठी एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन दिनांक ३० दिसंबर २०२४ को किया गया। विचार गोष्ठी एवं सम्मान समारोह में पधारे पूर्वोत्तर प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकरिया, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. श्याम सुंदर हरलालका, प्रांतीय महामंत्री श्री विनोद कुमार लोहिया, प्रांतीय पदाधिकारियों एवं सम्मानित सदस्यों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर, नवनिर्वाचित श्री गौशाला कार्यकारिणी के सभी सदस्यों का सम्मान किया गया एवं उनके उज्ज्वल भविष्य और समर्पित सेवा की कामना की।

सभी सदस्यों की उपस्थिति और समर्थन से इस कार्यक्रम को सार्थक और सफल बनाया गया। यह आयोजन प्रेरणादायक और समाज को नई दिशा देने वाला सिद्ध होगा। यह कार्यक्रम मधुर स्मृति और हमारे सामूहिक प्रयासों का प्रतीक है।

उत्कल समाज के ५१ वरिष्ठ जनों को सम्मान

स्थानीय महावीर पंचायत धर्मशाला में रविवार को मारवाड़ी सम्मेलन का ९०वां स्थापना दिवस और वरिष्ठ सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समाज के वार्षिक लेखा जोखा दिया गया। इस दौरान समाज के ८१ वरिष्ठ जनों को सम्मानित किया गया।

इस दौरान अध्यक्ष राजेश अग्रवाल ने सम्मेलन को सदैव समाज के उत्थान मे भागीदारी बताया। १९३५ मसीहा २५ दिसम्बर में समाज को एकजुट ओर आपस में सहयोग की भावना को लेकर कलकत्ता में गठन हुआ था। इस दिन वरिष्ठ लोगों का सम्मान दिवस भी मनाया जाता है। सचिव गोपाल टिबड़ेवाल ने सम्मेलन के किए गए सामाजिक कार्य की लेखा प्रस्तुत की। विधायक नवीन जैन ने बुजुर्गों का साथ ही मेरे लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद है। पुरी में एक मारवाड़ भवन निर्माण करने के लिए सबका सहयोग कदे लिए इच्छा जाहिर की। प्रायः ५१ वरिष्ठ सदस्य जिनकी उम्र ७० साल से अधिक था, उनको सम्मेलन की ओर से एक शॉल और श्रीफल से सम्मान किया गया। कोषाध्यक्ष राजिव ने धन्यवाद ज्ञापन और उमेश कनडिया ने मंच संचालन किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में विधायक नवीन जैन, प्रकाश कुमार गोयल, गोपाल अग्रवाल, सत्यनारायण गुप्ता, राजेश अग्रवाल, गोपाल टिबड़ेवाल, राजीव जैन, बिनोद मरोदिया, मामराज जैन, लीलाधर शर्मा, ईश्वर जैन, घनश्याम दास गोयल, गोकुल टिबड़ेवाल, ओमप्रकाश अग्रवाल, मनसाराम अग्रवाल, सूरजमल सोनी सहित अन्य लोग मौजूद थे।

गणतंत्र दिवस

क्या है भारतीय गणतंत्र दिवस का इतिहास और कहां पहली बार मनाया गया था इस दिन?

हर साल २६ जनवरी को भारत में गणतंत्र दिवस समारोह मनाया जाता है। जो हर एक भारतवासी के लिए गर्व का पल होता है और इस बार तो दोगुने जश्न का अवसर है क्योंकि भारत अपना ७५वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। आजादी के तीन साल बाद १९५० में देश का संविधान लागू हुआ था। झंडा लहराकर और मिठाइया बांट कर इसकी खुशियां मनाई गई थी। लेकिन कैसे संविधान बना, कब क्या हुआ और कहां पहली बार ये दिन मनाया गया था। आइए जानते हैं इस बारे में।

भारतीय गणतंत्र दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत के गणतंत्र दिवस का संबंध हमारी स्वतंत्रता से जुड़ा हुआ है। भारत को १५ अगस्त १९४७ को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली थी, लेकिन तब भारत का अपना कोई संविधान नहीं हुआ करता था। उस समय यहाँ कानून और शासन प्रणाली १९३५ के भारत सरकार के अधिनियम पर चल रही थी।

भारत के संविधान का मसौदा ६ दिसंबर १९४६ को गठित संविधान सभा के सदस्यों द्वारा तैयार कियागया था। इसकी पहली बैठक ९ दिसंबर १९४६ को हुई थी और सच्चिदानंद सिन्हा इसके अस्थायी अध्यक्ष थे।

इस संविधान सभा ने उसी वर्ष ११ दिसंबर १९४६ को राजेंद्र सिन्हा को अपना अध्यक्ष नियुक्त किया। १३ दिसंबर को जवाहरलाल नेहरू ने एक **"उद्देश्य प्रस्ताव"** पेश किया जो संविधान की प्रस्तावना बन गया। इस **"उद्देश्य प्रस्ताव"** को २२ जनवरी १९४७ को बिना किसी विरोध के अपनाया गया और इसने संविधान के सिद्धांतों को स्थापित किया जैसा कि इसे वर्तमान में जाना जाता है।

२९ अगस्त १९४७ को संविधान की प्रारूप समिति की नियुक्ति की गई तथा डॉ. बी. आर. अंबेडकर को इसका अध्यक्ष बनाया गया। जिसमें भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार डॉ. बी.आर. अंबेडकर थे। मसौदा समिति के छह अन्य सदस्य एन गोपालस्वामी अयंगर, के एम मुंशी, सैयद मुहम्मद सादुल्लाह, अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर, एन माधव राव और डीपी खेतान थे। समिति ने ४ नवंबर १९४८ को संविधान का अंतिम प्रारुप संविधान सभा में प्रस्तुत किया। फिर विचार-विमर्श और कुछ संशोधनों के बाद संविधान के प्रारुप को २६ नवंबर १९४९ को संविधान सभा द्वारा पारित किया गया। संविधान के कुछ प्रावधान २६ नवंबर १९४९ को ही लागु हो गए थे। हालांकि, संविधान के मुख्य भाग २६ जनवरी १९५० को लागु हुए। भारतीय संविधान, दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान है। इस संविधान में २२ भाग, ३९५ अनुच्छेद, और १२ अनुसूचियां हैं।

२६ जनवरी १९५० को भारत के गणतंत्र दिवस के रूप में मान्यता दी गई। इस दिन से भारत लोकतांत्रिक गणराज्य बना २६ जनवरी १९५० को खासतौर से संविधान की **'प्रारंभ तिथि'** के रूप में चुना गया था क्योंकि इसी दिन १९३० में कांग्रेस के लाहौर सत्र (दिसंबर १९२९) के प्रस्ताव के बाद पूर्ण स्वराज दिवस मनाया गया था। इसी दिन डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने २१ तोपों की सलामी के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया था। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वर्तमान संसद भवन के दरबार हॉल में राष्ट्रपति की शपथ ली थी। गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय अवकाश के रुप में मनाया जाता है। गणतंत्र दिवस के दिन नई दिल्ली में राजपथ पर सार्वजनिक परेड होती हैं। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्र भारत की भावना का स्मरण कराता हैं। गणतंत्र दिवस, भारतीय नागरिकों की लोकतांत्रिक तरीके से अपनी सरकार चुनने की शपथ दिलाता हैं।

भारत में पहली बार गणतंत्र दिवस कहां मनाया गया था?

भारत में पहली बार गणतंत्र दिवस २६ जनवरी १९५० को दिल्ली के पुराने किले के सामने स्थित इरविन स्टेडियम में मनाया गया था। आज इस जगह पर दिल्ली का चिड़ियाघर है। इरविन स्टेडियम में गणतंत्र दिवस की पहली परेड भी निकाली गई थी। कहते हैं कि इस परेड में लगभग ३ हजार सेना के जवानों ने और तकरीबन १०० से ज्यादा एयरक्राफ्ट ने हिस्सा लिया था।

कुंभ, अर्द्धकुंभ, पूर्णकुंभ और महाकुंभ

कुंभ मेला भारत के सबसे बड़े मेलों में शामिल है। हालांकि, यह भी तीन प्रकार का होता है। इसके प्रकार अर्द्धकुंभ, पूर्णकुंभ और महाकुंभ है। अब सवाल है कि इन तीनों में क्या अंतर होता है, यदि आप नहीं जानते हैं, तो इस लेख के माध्यम से हम इस बारे में जानेंगे।

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में इस समय महाकुंभ की तैयारियां चल रही है। महाकुंभ का आयोजन १३ जनवरी, २०२५ से २६ फरवरी २०२५ तक होगा। इस बार का महाकुंभ बहुत बड़े स्तर पर हो रहा है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु शामिल होंगे और संगम पर आस्था की डुबकी लगाएंगे।

हालांकि, क्या आप जानते हैं कि अर्द्धकुंभ, पूर्णकुंभ और महाकुंभ में क्या अंतर होता है। क्योंकि, ये तीनों मेले ही अलग-अलग समय पर होते हैं। क्या हैं इसके पीछे का कारण, जानने के लिए यह पूरा लेख पढ़ें।

क्या होता है कुंभ

कुंभ मेले का आयोजन भारत में चार स्थानों पर होता है। इसमें हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज शामिल है। इस दौरान श्रद्धालु गंगा, गोदावरी और क्षिप्रा नदी में आस्था की डुबकी लगाते हैं। वहीं, प्रयागराज में लोग संगम में स्नान करते हैं।

क्या होता है अर्द्धकुंभ मेला

अर्द्धकुंभ मेले का आयोजन प्रत्येक छह वर्ष में एक बार किया जाता है। यह मेला सिर्फ प्रयागराज और हरिद्वार में होता है, जिसमें करोड़ों संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

क्या है पूर्णकुंभ मेला

अब सबाल है कि आखिर पूर्णकुंभ मेला क्या होता है, तो आपको बता दें कि पूर्णकुंभ मेला १२ वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है। यह मेला प्रयागराज में संगम तट पर आयोजित होता है, जिसमें करोड़ों संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

आखिर बार साल २०१३ में यहां पूर्णकुंभ मेले का आयोजन किया गया था। वहीं, इसके बाद अब २०२५ में पूर्णकुंभ आयोजित हो रहा है। हालांकि, इसे महाकुंभ नाम दिया जा रहा है। अब सवाल है कि आखिर इसे यह नाम क्यों दिया गया है, जानने के लिए नीचे पढ़ें।

क्या होता है महाकुंभ

प्रयागराज में साल २०२५ में आयोजित हो रहे मेले को महाकुंभ नाम दिया गया है। आपको बता दें कि जब प्रयागराज में १२ बार पूर्णकुंभ हो जाते हैं, तो उसे एक महाकुंभ का नाम दिया जाता है। पूर्णकुंभ १२ वर्ष में एक बार लगता है और महाकुंभ १२ पूर्णकुंभ में एक बार लगता है।

इस प्रकार वर्षो की गणना करें, तो यह १४४ सालों में एक बार आयोजित होता है। इस वजह से इसे महाकुंभ कहा जाता है। यह सबसे बड़ा मेला होता है, जिसमें सबसे अधिक श्रद्धालु पहुंचते हैं।

गृहस्थ लोगों को महाकुंभ में स्नान करने से पहले जान लेना चाहिए यह जरूरी नियम, तभी मिलेगा स्नान का पुण्य

कुंभ स्नान में स्नान करने को लेकर गृहस्थ लोगों को जरूरी २ बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए तभी पवित्र स्नान का पूर्ण लाभ मिलता है।

साल २०२५ में १३ जनवरी से प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन होने जा रहा है। मान्यता है कि कुंभ स्नान करने से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है और पिछले सारे पाप भी धुल जाते हैं। यही कारण है इस मेले में देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु, साधु-संत संगम किनारे एकत्रित होते है। इस साल लगभग ४० करोड़ लोग कुंभ मेले में आस्था की डुबकी लगाएंगे। महाकुंभ सिर्फ धर्म तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक और सामाजिकता का प्रतीक है।

कुंभ मेले का आयोजन ४५ दिन तक चलता है, जिसमें शाही स्नान की तिथियां महत्वपूर्ण होती हैं। इस दौरान स्नान को लेकर कुछ नियम होते हैं जिनका ध्यान गृहस्थ लोगों को विशेष रूप से रखना चाहिए तभी पवित्र स्नान का पूर्ण लाभ मिलता है। स्नान से पहले गृहस्थ लोगों को २ जरूरी बातों का खास ख्याल रखना चाहिए...

क्या है मकर संक्रांति ?

सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करना 'मकर संक्रांति' कहलाता है। इसी दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। शास्त्रों में उत्तरायण के समय को देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन को देवताओं की रात कहा गया है। इस तरह मकर संक्रांति एक तरह से देवताओं की सुबह होती है। इस दिन स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान का बहुत महत्व है। कहते हैं कि इस मौके पर किया गया दान सौ गुना होकर वापस फलीभूत होता है। मकर संक्रांति के दिन घी, तिल, कंबल एवं खिचड़ी दान का खास महत्व है। पूरे देश का त्यौहार मकर संक्रांति।

ऐसी मान्यता है कि गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर तीर्थ राज प्रयाग में 'मकर संक्रांति' पर्व के दिन सभी देवी-देवता अपना स्वरूप बदल कर स्नान के लिए आते हैं। इस मौके पर इलाहाबाद (प्रयाग) के संगम स्थल पर हर साल लगभग एक मास तक माघ मेला लगता है, जहां लोग कल्पवास भी करते हैं। बारह साल में एक बार कुंभ मेला लगता है, यह भी लगभग एक महीने तक रहता है। इसी तरह ६ बरसों में अर्धकुंभ मेला भी लगता है। मकर संक्रांति पर्व हर साल १४ जनवरी को पड़ता है। एक और प्रसिद्ध मेला बंगाल में मकर संक्रांति पर्व पर गंगा सागर में लगता है।

गंगा सागर के मेले के पीछे पौराणिक कथा है, कि आज के दिन गंगा जी स्वर्ग से उतरकर भागीरथ के पीछे-पीछे चल कर कपिल मुनि के आश्रम में जाकर सागर में मिल गई। गंगा जी के पावन जल से ही राजा सगर के ६० हजार शापग्रस्त पुत्रों का उद्धार हुआ था। इसी घटना की स्मृति में यह तीर्थ का नाम गंगा सागर के नाम से विख्यात हुआ और हर साल १४ जनवरी को गंगा सागर में मेले का आयोजन होने लगा।

महाराष्ट्र में ऐसा माना जाता है कि मकर संक्रांति से सूर्य की गति तिल-तिल बढ़ने लगती है, इसलिए इस दिन तिल के बने मिष्टान्न बनाकर एक-दूसरे को बांटने की परंपरा है। महाराष्ट्र और गुजरात में मकर संक्रांति पर्व पर अनेक खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होता है।

पंजाब, जम्मू-कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश में लोहड़ी के नाम से मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है। एक प्रचलित लोक कथा के अनुसार मकर संक्रांति के दिन कंस ने श्री कृष्ण को मारने के लिए लोहिता नाम की राक्षसी को गोकुल भेजा था। जिसे श्री कृष्ण ने खेल-खेल में ही मार डाला था। उसी घटना के फलस्वरू लोहड़ी पर्व मनाया जाता है। सिंधी समाज भी मकर संक्रांति के एक दिन पूर्व इसे 'लाल लोही' के रूप में मनाता है। दक्षिण भारत में मकर संक्रांति को पोंगल के रूप में मनाया जाता है। इस दिन तिल, चावल, दाल की खिचड़ी बनायी जाती है। इस मौके पर बैलों की लड़ाई होती है, इसे मत्तु पोंगल भी कहते है। तमिलनाडु में तमिल पंचांग का नया साल पोंगल ही होता है।

राजस्थान की प्रथा के अनुसार इस दिन महिलाएं तिल के लड्डू तथा चूरमें के लड्डू बनाकर सास-ससुर या दूसरे बड़े-बुजुर्गों का देती हैं और उनका आशीर्वाद लेती है। राजस्थान-हरियाणा में मुख्य रूप से दाल, बाटी, चूरमा, खीर-पूरी का भगवान को भोग लगाकर भोजन किया जाता है। कई जगहों पर विशाल दंगल का आयोजन भी किया जाता है। राजस्थान की राजधानी जयपुर में पतंग प्रतियोगिताएं भी होती हैं। इसके अलावा दक्षिण बिहार के मदार क्षेत्र में भी एक मेला लगता है।

ग्रंथों में है इसके महत्व का वर्णन मकर संक्रांति के त्यौहार का वर्णन जाने-माने ग्रंथो में भी मिलता है।

माघे मासि महादेव यो दद्यात् घृतकम्बलम्।
स भुक्त्वा सकलान भोगान् अन्ते मोक्षं च विन्दति।।
माघ मासे तिलान यस्तु ब्राहमणेभ्यः प्रयच्छति।
सर्व सत्त्व समाकीर्ण नरकं स न पश्यति।।
(महाभारत अनुशासन पर्व)

मकर संक्रांति के दिन गंगा स्नान और गंगा तट पर दान की खास महिमा है। तीर्थ राज प्रयाग में मकर संक्रांति मेला तो सारी दुनिया में विख्यात है। इसका वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्री रामचरित मानस में लिखा है:-

माघ मकर गत रवि जब होई।
तीरथ पतिहिं आव सब कोई।।
देव दनुज किंनर नर श्रेनी।
सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी।।

इस दिन सूर्य अपनी कक्षाओं में बदलाव कर दक्षिणायन से उत्तर तरफ होकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं। जिस राशि में सूर्य की कक्षा का परिवर्तन होता है, उसे 'संक्रमण' या 'संक्रांति' कहा जाता है। मकर संक्रांति से सूर्य उत्तरायण हो जाने का मतलब गरम मौसम की शुरुआत की तरह देखा जाता है।

Yours Tastefully
Anmol
TM
Enjoy Great Taste
with Good Health
Anmol
FruitBix
Anmol
dream
LITE
Anmol
Marie
Plus
With Best Compliments from:
Anmol Industries Ltd.
BISCUITS, CAKES & COOKIES
BISCUITS
For your comments, complaints and trade related queries write to us at info@anmolindustries.com
or call us at 1800 1037 211 | www.anmolindustries.com | Follow us on:

उत्कल प्रांत द्वारा स्थापना दिवस का पालन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ९०वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रांतीय इकाई उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने स्थापना दिवस समारोह अपने प्रांतीय कार्यालय में मनाया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९०वें फाउंडेशन डे संबलपुर स्थित उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय कार्यालय अग्रसेन भवन में बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। इस मौके पर प्रदेश की अनेक शाखाओं द्वारा जरूरतमंदों में कंबल वितरण किया गया। सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल के अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के तहत बरपाली शाखा द्वारा बीजेपुर स्थित पार्वती गिरी वृद्ध आश्रम में रह रहे २५ बुजुर्गों में कंबल बांटे गए और सम्मेलन से जुड़े कई वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान भी किया गया।

झारसुगुड़ा शाखा में गरीबों को कंबल वितरण

टिटलागढ़ शाखा द्वारा स्थापना दिवस समारोह

मिली जानकारी के मुताबिक झारसुगुड़ा और टिटिलागढ़ शाखाओं द्वारा जरूरतमंदों में जहां कंबल वितरण किया गया वहीं, कांटाबांजी शाखा की ओर से गौ सेवा कार्यक्रम चलाया गया। इस दौरान सम्मेलन द्वारा बरगढ़ शाखा परिवार के वरिष्ठ सदस्यों जयप्रकाश अग्रवाल, गोविंद छापडिया, रघुवर रेखानी एवं सरायपाली (छत्तीसगढ़) के विशिष्ट युवा समाजसेवी विश्वजीत गुप्ता को अंग-वस्त्र भेंटकर सम्मानित किया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर कटक से पधारे सम्मेलन शाखा सदस्यों द्वारा दिव्यांगजनों में फल व भोजन वितरित किया गया।

बारपली शाखा द्वारा गरीबों को कंबल वितरण

इस कार्यक्रम के दौरान अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन सह उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़े वरिष्ठ समाजसेवी माधव चंद्र डालमिया, मंगतूराम अग्रवाल, विशिष्ट समाजसेवी पवन सुल्तानिया, नवल अग्रवाल, ओमप्रकाश खेतान, अशोक कुमार जालान, ज्ञान प्रकाश अग्रवाल व सुशील केडिया समेत विभिन्न शाखा से पहुंचे सदस्यों ने सम्मेलन से संबंधित विचारों को रखा एवं सेवा कार्य को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। सम्मेलन के पदाधिकारियों ने अगले वर्ष १२ जनवरी को पश्चिम ओड़िशा के केसिंगा में होने वाले सम्मेलन के लिए ओडिशा रोड मैप तैयार करने पर चर्चा की गई।

अस्पताल में भोजन वितरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आज मारवाड़ी सम्मेलन बरगढ़ शाखा द्वारा स्थानीय सरकारी हॉस्पिटल में करीबन २०० लोगों को भोजन वितरण किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रुप से शाखा अध्यक्ष श्री जगदीश गोलपुरिया के साथ श्री महेश अग्रवाल, श्री किशन लाल अग्रवाल, श्री अशोक अग्रवाल (अधिवक्ता), श्री सुभाष अग्रवाल जी (चंदन ट्रेडिंग), श्री विष्णु धानुका, श्री अजय रेखानी, श्री दिलीप सांवडिया, श्री संदीप सांवड़िया, श्री किशोर अग्रवाल, श्री केशव अग्रवाल, एवम अन्य सदस्यों ने अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया।

इस कार्यक्रम के प्रायोजक सम्मेलन परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्रीमान सुभाष जी को अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया।

'पधारो म्हारा देश' कार्यक्रम का आयोजन

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की जालना शाखा, व जिला जालना, मारवाड़ी युवा मंच जालना व जालना सकल समाज एवं महाराष्ट्र मारवाड़ी चैरिटेबल फाउंडेशन जालना के तत्वाधान में १०-११ जनवरी २०२५ को दो दिवसीय सामाजिक सम्मान समारोह जालना स्थित श्रीमती दानकुंवर महिला कॉलेज में 'पधारो म्हारा देश' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह के उद्‌घाटनकर्ता राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री हरिभाऊ बागड़े, मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथि एवं विशेष अतिथि के तौर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी, राज्यसभा सांसद डॉ. भागवत कराड़, विधायक अर्जुन खोतकर, विधायक बबनराव लोणिकर, विधायक नारायण कुचे, विधायक अनुराधा चव्हाण, पूर्व मंत्री राज पुरोहित आदि मौजूद रहे।

उद्‌घाटनकर्ता राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने अपने वक्तव्य में कहा कि, "मारवाड़ी समाज देशभक्तिपूर्ण, धार्मिक और नवीन दृष्टिकोण वाला एक प्रगतिशील समाज है, उद्यमी, पेशेवर मॉडल और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में इनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।" उन्होंने कहा कि, 'देश के किसी भी गांव में चले जाइए, आपको कम से कम एक घर मारवाड़ी समुदाय का दिखेगा'। इस मौके पर बागड़े ने उस कहावत को याद दिलाया कि 'जहां ना पहुँचे बैलगाड़ी, वहां पहुँचे मारवाड़ी' समाज ने देश की सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत को बहुत परिश्रम से विकसित किया है। राजस्थान राज्य में शिक्षा, कृषि उन्नत है। वहां का शिक्षा विभाग उन्नत है, श्री बागड़े जी ने यह भी कहा कि, राजस्थान के विश्वविद्यालय और कॉलेज अच्छी तरह व्यवस्थित हैं, महाराष्ट्र से कई छात्र राजस्थान में पढ़ने आ रहे हैं। 'राजस्थानी समाज सौंदर्य और कला का उपासक है। रोजगार सृजन कर देश की संपत्ति सृजन में राजस्थानी समुदाय की बड़ी हिस्सेदारी है। २०४७ में हमारा देश दुनिया में नंबर एक होगा, जिसमें राजस्थानी समाज एक बहुत बड़ी भुमिका निभाएगा।

विधायक बबनराव लोणिकर, विधायक अर्जुन खोतकर, विधायक नारायण कुचे, पूर्व मंत्री एवं निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष राज पुरोहित ने राज्यपाल महोदय का आभार व्यक्त किया। माननीय श्री बागड़ेजी को योग्यता प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया और शहर के विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट योगदानों का अभिनंदन भी किया।

उक्त समारोह में पूर्व विधायक शकुंतला शर्मा, पूर्व प्रांतीय

महामंत्री श्री वीरेंद्र धोका, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री उमेश पंचारिया, जिलाध्यक्ष जालना श्री सुभाष देवीदान, शहरीध्यक्ष जालना श्री शरद काबरा, जालना युवा मंच अध्यक्ष श्री महेश भक्कड़, श्री पन्नालाल बगड़िया, श्री घनश्यामदास गोयल, श्री सीताराम शर्मा, श्री संतोष धोका, श्री प्रितेष मालपानी, श्री संजय राठी, मनीष तवरवाला, महावीर जांगिड़, महेंद्र गुप्ता, श्री पियूष होलानी, श्री अनुराग अग्रवाल सहित मारवाड़ी समाज से सैकड़ो की संख्या में महिलाएं एवं पुरुषों की उपस्थिति रही।

जालना में मारवाड़ी सम्मेलन एवं युवा मंच द्वारा अन्नपूर्णा योजना की शुरुआत

जालना मारवाड़ी सम्मेलन और जालना मारवाड़ी युवा मंच की ओर से नए साल से "अन्नपूर्णा योजना" की शुरुवात हुई जिसके तहत हर शनिवार को जरूरतमंद लोगों को फूड पैकेट वितरण किया जायेगा, जिसकी शुरुआत जालना के शनि मंदिर से की गई, इस कार्य के लिए जालना मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष शरदजी काबरा एवं मधुसूदनजी नावंदर द्वारा हर शनिवार को शनि मंदिर, नाथ बाबा गणेश मंदिर, पंचमुखी महादेव मंदिर, मम्मादेवी मंदिर, में जाकर जरूरतमंद को फूड पैकेट दिए जाएंगे। भविष्य में एक जगह मिलने पर जरुरतमंद को १ रुपए में भोजन दिया जायेगा ऐसी योजना की जा रही हैं। जालना में कोई भी भूखा पेट ना रहे इसका ध्यान रखकर इस कार्य को और बढ़ाने का संकल्प लिया गया।

जालना मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष शरद काबरा, महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री सुदेश करवा, संगठन मंत्री विरेंद्र धोका, औरंगाबाद डिविजन के उपाध्यक्ष उमेश पंचारिया, पीआरओ मनीष तवरावाला, सीए नितिन तोतला, रमेश मोदी, अरुण अग्रवाल, मधुसूदन नावंदर, अमोल बांगड़, की उपस्थिति में जरूरतमंदो को फूड पैकेट के वितरण की शुरुआत की गई।

श्री अक्षय अग्रवाल अध्यक्ष एवं श्री विनय सिंघल महामंत्री चुने गए

२५ दिसम्बर २०२४ को आयोजित आम सभा में केरल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आगामी प्रांतीय अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया संपन्न हुई, जिसमें सर्व सम्मति से श्री अक्षय अग्रवाल को प्रांतीय अध्यक्ष चुना गया। तत्पश्चात निम्नलिखित पदाधिकारीगणों की घोषणा की गई :–

प्रांतीय अध्यक्ष : श्री अक्षय अग्रवाल, प्रांतीय महामंत्री : श्री विनय सिंघल, प्रांतीय उपाध्यक्ष : श्री कुलदीप बैद, प्रांतीय कोषाध्यक्ष : श्री हरि वर्मा, प्रांतीय संयुक्त मंत्री : श्री अखिल काछोलिया

प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल ने नव निर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया एवं श्री पवन गोयनका ने भी नव निर्वाचित अध्यक्ष का अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से स्वागत किया एवं बधाई दी। उपस्थित सभी सदस्यों ने नई कार्यकारिणी को बधाई दी।

अपने सम्बोधन में नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री अक्षय अग्रवाल ने सभी के साथ मिलकर समाज सेवा एवं समाज सुधार के लिए कार्य करने एवं केरल सम्मेलन को नई ऊंचाई प्रदान करने का वादा किया।

सभा के आखिर में श्री निरंजन लाल जी मित्तल ने कविता पाठ के साथ आगंतुक अतिथियों एवं सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

संक्षिप्त परिचय – श्री अक्षय अग्रवाल

श्री अक्षय अग्रवाल, एक्यूमेन कैपिटल मार्केट (आई) लिमिटेड के प्रबंध निदेशक हैं, जो एक प्रमुख वित्तीय सेवा कंपनी है, जिसका मुख्यालय कोच्चि में है, जिसकी देश भर में २६ शाखाएँ और ८०० व्यापारिक केंद्र हैं। यह एनएसई, बीएसई, एमसीएक्स, एनसीडीईएक्स इत्यादि जैसे प्रमुख राष्ट्रीय एक्सचेंजों और एनएसडीएल और सीडीएसएल जैसे डिपॉजिटरी के सदस्य है।

वित्तीय बाजारों के क्षेत्र में ३० से अधिक वर्षो के अनुभव के साथ एक शेयर बाजार विशेषज्ञ, वह एक सक्रिय निवेशक और एल्गो ट्रेडर भी हैं। वह केरल के कुछ शीर्ष टीवी चैनलों, सीएनबीसी टीवी १८ आदि में भाग लेते हैं और कुछ वित्त पत्रिकाओं में लेख लिखते हैं।

एक उत्साही प्रशिक्षक, वह केरल के कुछ शीर्ष एमबीए संस्थानों में शिक्षक मंडल के अतिथि भी है।

वह इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, कोचीन के अध्यक्ष, चिन्मय कॉलेज सलाहकार बोर्ड के सदस्य और कोचीन कॉलेज चलाने वाली कोचीन एजुकेशनल सोसाइटी के सदस्य हैं, वे इंडियन पेपर एक्सचेंज - आईपीएसटीए के बोर्ड में भी थे।

श्री अक्षय डीसी मीडिया के "इमर्जिंग केरल" - बिजनेस एक्सीलेंस अवार्ड-२०१४-१५ से पुरस्कृत हैं, और फ्यूचर केरल के सर्वश्रेष्ठ वेल्थ मैनेजमेंट ब्रांड २०१८ अवार्ड से भी पुरस्कृत।

२०१९ में श्री अग्रवाल को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड से "दक्षिण भारत में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले सदस्य - कमोडिटी सेगमेंट" का पुरस्कार मिला था।

२०१४ के दौरान अग्रवाल युवा मंडल, कोचीन के अध्यक्ष थे, २०२० के दौरान तमिलनाडु अग्रवाल समाज (तमिलनाडु और केरल में ११ अग्रवाल समाजों का एक संघ) के अध्यक्ष थे, एवं अग्रवाल समाज केरल के अध्यक्ष हैं। वर्तमान में आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय इकाई केरल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष के पदभार को सुशोभित कर रहे हैं।

समाज सुधार पर बैठक

२५-१२-२०२४ को केरल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होटल ताज विवाँता, मरीन ड्राइव, कोचीन में सभा प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल अध्यक्षता में संपन्न हुई। सर्वप्रथम सम्मेलन का ९०वां स्थापना दिवस मनाया गया तत्पश्चात समाज सुधार एवं समरसता पर परिचर्चा हुई तथा आखिर में प्रांतीय अध्यक्ष का चुनाव किया गया एवं प्रांतीय कार्यकारिणी का गठन किया गया।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल ने आगंतुक सभासदों का स्वागत किया, सम्मेलन के ९०वें स्थापना पर सभी को बधाई दी एवं समाज सुधार एवं समरसता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

प्रधान अतिथि श्री पवन गोयनका ने सभा के आयोजन एवं सम्मान के लिए प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर जी अग्रवाल एवं पूरी टीम को बधाई एवं धन्यवाद दिया एवं सम्मेलन के ९०वें स्थापना पर सभी को बधाई दी। उन्होंने मारवाड़ी समाज की विशेषताओं, मारवाड़ी संस्कृति एवं संस्कारों, सम्मेलन के इतिहास एवं उदेश्यों पर चर्चा करते हुए वर्तमान में समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं समस्याओं पर गहन एवं विस्तृत चर्चा की जिसमें श्री शिव कुमार जी सिंघल, श्री निरंजन लाल जी मित्तल, श्री रतन लाल जी बाफना, श्री मनीष गुप्ता, श्री सुनील जीतानी एवं उपस्थित अन्य सदस्यों ने अपने अपने विचार एवं सुझाव रखें। सभा का सफल संचालन श्री विनय सिंघल ने किया।

सर्व सम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिएः–

१. समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हेतु सम्मेलन एवं व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास किये जायेंगे।
२. प्री-वेडिंग शूटिंग को रोकने एवं इसका सार्वजनिक प्रदर्शन बंद करने का प्रयास किया जायेगा।
३. विवाह के अवसर पर शराब का प्रचलन बंद करने का प्रयास किया जायेगा।
४. शादी व अन्य समारोह में सड़कों पर समाज की महिलाओं द्वारा नृत्य एवं फिजूलखर्च को निरुत्साहित किया जायेगा।
५. बच्चों में मारवाड़ी संस्कार दिये जाये एवं मायड़ भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग किया जायेगा।
६. समाज एवं सम्मेलन में युवाओं एवं महिलाओं की सक्रिय सहभागिता बढ़ाई जाएगी एवं अधिक से अधिक भारतीय त्योंहार मनाये जायेंगे।

वार्षिक मिलन सह सम्मान समारोह

दुमका जिला मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा **वार्षिक मिलन सह सम्मान समारोह** मनाया गया, साथ ही आगामी सत्र के नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी समिति का शपथ ग्रहण समारोह भी दिनांक २२ दिसंबर २०२४ को श्री अग्रसेन भवन के प्रांगण में मनाया गया।

कार्यक्रम में माननीय प्रांतीय अध्यक्ष भाई बसंत मित्तल जी एवं प्रमंडलीय उपाध्यक्ष भाई शिव सर्राफ उपस्थित थे।

दुमका शहर के मारवाड़ी समाज के इस वर्ष विभिन्न क्षेत्रों (CA, MBA, B.Tec, LLB) आदि और भी अन्य क्षेत्रों में सफल बच्चों बच्चियों को सम्मानित किया गया।

प्रांतीय स्थाई कार्यालय हेतु दुमका के दस (10) माननीय सदस्यों द्वारा ट्रस्टी बनाये गए। सभी ट्रस्टियों को भी सम्मानित किया गया।

नए जिला अध्यक्ष श्री हरि शंकर मोदी जी एवं सचिव श्री बिनोद सिंघानिया जी को साथ ही नई कार्यकारिणी समिति की शपथ दिलाई गई।

चुड़ा एवं गुड़ वितरण

मारवाड़ी सम्मेलन सोनारी शाखा के द्वारा पौष पूर्णिमा के पावन अवसर पर एवं मकर संक्रांति के पूर्व संध्या पर सोनारी के निर्मल नगर, रूपनगर में जरूरतमंद परिवारों के बीच २०० पेकेट एवं ६० पेकेट पूजापाठी पंडियों के बीच चूड़ा एवं गुड़ का वितरण शाखा अध्यक्ष श्री आनंद अग्रवाल के नेतृत्व में प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश रिंगसियाजी की गरिमामई उपस्थिति में किया गया।

प्रांतीय कार्यकारिणी बैठक एवं प्रमंडलीय अधिवेशन

१२ जनवरी २०२५ रविवार को चंदवा (लातेहार) में पलामू प्रमंडल का प्रमंडलीय अधिवेशन सह षष्टम प्रांतीय कार्यकारिणी समिति की बैठक संपन्न हुई। प्रांतीय कार्यकारिणी समिति कि बैठक की अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष श्री बसंत कुमार मित्तल ने की।

श्री मित्तल ने अपने सम्बोधन में कहा कि मेरे दो साल के कार्यकाल में लगभग १५०० नये आजीवन एवं ३ विशिष्ट संरक्षक सदस्य ३ संरक्षक सदस्य बनाये गये और इन सभी सदस्यों की सदस्यता शुल्क का हिस्सा राष्ट्रीय महामंत्री को भेजा जा चुका है। हमलोगों ने झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का अपना स्थाई कार्यालय नाने का जो संकल्प किया था वो भी आप सभी समाज बंधुओं के सहयोग से जल्द पुरा होने जा रहा है।

सामूहिक पिकनिक

२४ दिसंबर २०२४ मंगलवार को मारवाड़ी सम्मेलन साकची शाखा की सामूहिक पिकनिक हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी निक्को पार्क में समाज बंधुओं के लिए आयोजन किया गया था। पिकनिक में भारी संख्या में समाज के अभिभावक सम्मानित सदस्य नारी शक्ति युवा शक्ति बच्चे करीब २५०० सदस्यों ने सुबह का नाश्ता, दोपहर का खाना, शाम की टी पार्टी के अलावा वहां खेलकूद भी आयोजित हुए।

शोक समाचार

मारवाड़ी सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य सुप्रसिद्ध उद्योगपति गौ भक्त अशोक भालोटिया एवं लखीमपुर असम के कर्मयोगी राजेश भालोटिया के गोलोकवास होने के समाचार प्राप्त हुआ है।

प्रभु दिवंगत आत्मा को मोक्ष प्रदान कर अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें एवं उनके समस्त परिवार को इस दुख को सहन कर पाने की शक्ति प्रदान करें।

प्रांतीय समाचार : पूर्वोत्तर

लेदर बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता - 'प्रमोटर्स मीट'

मारवाड़ी सम्मेलन गुवाहाटी शाखा द्वारा आयोजित लेदर बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रमोटर्स मीट कर दीप प्रज्वलन से शुभारंभ करते हुए अध्यक्ष शंकर बिड़ला ने सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया और उनके सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

परियोजना अध्यक्ष राहुल लोहिया और संयोजक रमेश दमानी व प्रवीण डागा ने प्रतियोगिता के नियमों की जानकारी प्रभावशाली ढंग से दी। प्रमोटर्स की ओर से भी कई महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए।

प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा के नेतृत्व में प्रांतीय टीम ने उपस्थिति दर्ज कराते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया, जबकि माहेश्वरी सभा के पदाधिकारियों का भी विशेष रूप से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सचिव अशोक सेठिया ने कुशलतापूर्वक किया।

लखीमपुर महिला शाखा द्वारा वनभोज

मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा लखीमपुर ने नव वर्ष के अवसर पर दिनांक ०३ जनवरी शुक्रवार को वनभोज (पिकनिक) का आयोजन जोहिंग स्थित पवित्र त्रिवेणी संगम के तट पर किया। १०० से ज्यादा सदस्यों ने विभिन्न प्रकार के मनोरंजक खेल के साथ नाश्ते व दोपहर में स्वादिष्ट व्यंजनों का भरपूर आनंद उठाया। कार्यक्रम संयोजिका द्वय उर्मिला दिनोदिया एवं सुषमा लखोटिया के साथ अध्यक्षा रंजू बाकलीवाल व सचिव संगीता पटवारी ने अथक प्रयास किए।

गुवाहाटी शाखा का ऐतिहासिक योगदान

आज जागीरोड में आयोजित प्रांतीय कार्यकारिणी बैठक में, मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी शाखा ने निर्माणाधीन छात्रावास के लिए ₹11,00,000 का अनुदान देने का आह्वान किया। इस आह्वान के तहत, आज ₹5,00,000 का चेक प्रांतीय अध्यक्ष को सौंपा गया। शाखा ने यह भी आश्वासन दिया कि यदि आगामी लेदर बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का सफल आयोजन होता है, तो शेष ₹6,00,000 का योगदान शीघ्र ही प्रदान किया जाएगा।

यह छात्रावास विशेष रूप से उन छात्राओं के लिए उपयोगी होगा, जिनके लिए वर्तमान में ऐसी कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। इस महत्वपूर्ण पहल को प्रांतीय कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों ने सराहा और स्वागत किया।

इस अवसर पर हमारी कार्यकारिणी के प्रमुख सदस्य उपस्थित रहे, जिनमें :

शाखा अध्यक्ष : शंकर बिड़ला, निवर्तमान अध्यक्ष : श्री सुशील गोयल, शाखा उपाध्यक्ष : श्री प्रदीप भुवालका, शाखा सचिव : श्री अशोक सेठिया, प्रचार मंत्री : श्री नरेंद्र सोनी, कार्यकारिणी सदस्य : श्री माखनलाल अग्रवाल और श्री विवेक सांगानेरिया। साथ ही समाज के कई प्रबुद्ध सदस्यगण भी इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। यह कदम समाज के छात्राओं के भविष्य को सुरक्षित करने और उनके लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

प्रांतीय समाचार : उत्कल

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, बेलपहाड़ शाखा का स्थापना समारोह आयोजित हुआ। विश्वनाथ अग्रवाल एवं उनकी टीम को बधाई। श्री दिनेश अग्रवाल, यूपीएमएस प्रदेश अध्यक्ष मुख्य अतिथि थे।

प्रांतीय समाचार : उत्कल

कार्यकारिणी की बैठक

उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का द्वितीय कार्यकारिणी बैठक मंथन २०२५ की बैठक केसिंगा में ३०० सदस्यों की उपस्थिति में सफल और सकारात्मक चर्चा तथा निर्णय के साथ संपन्न हुआ मंच में प्रांतीय अध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल, प्रांतीय मंत्री डॉ. सुभाष चन्द्र अग्रवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष डॉ. कैलाशजी, पुर्व प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. गोविन्दजी, श्री अशोक जालान, संगठन उपाध्यक्ष श्री मधु शर्मा, CAIT के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री ब्रजमोहनजी, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री दीपकजी, पवनजी, किशनजी, दिनेशजी दीनदयाल केडिया जी, प्रांतीय जोन सचिव श्री किशोरजी, कालाहांडी जिला सचिव श्री लालचंदजी, शाखा सचिव श्री गोपाल जैन, शाखा अध्यक्ष श्री श्यामसुंदर अग्रवाल थे। समाज के विभिन्न विषय पर मंथन से यह तय किया गया कि सामूहिक कार्यक्रम, संगठन, सकारात्मक विचार, सामाजिक पंचायत को मजबूती, मिलित बैठक युवा मंच, महिला मंडल, समाज की अन्य संस्थाओं के साथ, जोन कदी रिपोर्टिंग पर जोर दिया जाएगा। जो भी मेम्बर ५ रिश्ते करवाएगा, प्री वेडिंग से परहेज करेगा, उसे सम्मानित किया जाएगा, शिक्षा विकास ट्रस्ट में बढ़ चढ़के सबने अनुदान दिया उसके लिए सभी भामाशाहों का धन्यवाद।

विभिन्न शाखाओं द्वारा सेवा कार्य, वरिष्ठ सदस्य सम्मानित

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के ९०वें स्थापना दिवस पर प्रांत कार्यालय समेत उत्कल प्रदेश की विभिन्न शाखाओं की ओर से सेवा कार्य कर किया गया। संबलपुर प्रांत कार्यालय में प्रांतीय अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल की अध्यक्षता में स्थापना दिवस मनाया गया। बारपली शाखा द्वारा बीजेपुर स्थित पार्वतिगिरि वृद्धाश्रम में २५ कंबल बांटे गये और समाज के बुजुर्गों को सम्मानित किया गया। झारसुगुड़ा और टिटिलागढ़ शाखा के सदस्यों ने कंबल बांट कर स्थापना दिवस मनाया। कांटाबांझी शाखा की ओर से गोसेवा कर स्थापना दिवस मनाया गया। बरगढ़ शाखा सम्मेलन परिवार के वरिष्ठ सदस्यों में जयप्रकाश अग्रवाल, गोविंद छापड़िया, रघुवर रेखानी एवं सरायपाली के विशिष्ट युवा समाजसेवी विश्वजीत गुप्ता को अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कटक शाखा के सदस्यों ने दिव्यांगों को भोजन एवं फल वितरण करने के साथ भजन कीर्तन कर स्थापना दिवस मनाया। सोहेला शाखा ने समाज के वरिष्ठ जनों को शॉल भेंट कर सम्मानित किया।

प्रांतीय समाचार : उत्तर प्रदेश

कानपुर शाखा ने किया शिक्षकों को सम्मानित

मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर शाखा द्वारा दामोदर नगर सरस्वती विद्या मंदिर में मंगलवार को सर्दी के अवसर पर सभी शिक्षकों को जैकेट देकर सम्मानित किया गया। मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष ओमप्रकाश अग्रवाल ने सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई दी। कार्यक्रम में प्रांत संगठन मंत्री रजनीश जी, प्रदेश निरीक्षक भारतीय शिक्षा समिति कानपुर प्रांत अयोध्या प्रसाद मिश्र, प्रदेश अध्यक्ष श्रीगोपाल तुलस्यान, अध्यक्ष ओमप्रकाश अग्रवाल संरक्षक सीताराम मित्तल की उपस्थिति में यह कार्यक्रम दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात प्रांत संगठन मंत्री रजनीश जी और प्रदेश निरीक्षक भारतीय शिक्षा समिति कानपुर प्रांत अयोध्या प्रसाद मिश्र का सम्मान किया गया। संचालन कार्य प्रधानाध्यापक रत्नेश अवस्थी द्वारा किया गया। महामंत्री प्रदीप केडिया कोषाध्यक्ष, महेंद्र लडिया, उपाध्यक्ष मनोज अग्रवाल ने बताया कि हर साल सर्दी के मौसम में शिक्षकों को समय-समय पर सम्मानित किया गया है जो शिक्षक मेहनत करके बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं। संस्कारशाला के बच्चों को भी स्वेटर वितरित किए जाते हैं। इस अवसर पर कुंभ के लिए १०० कम्बल विद्यापीठ को दिए गए। कार्यक्रम में ओम राजपुरोहित, अनूप अग्रवाल, वासुदेव सराफ, महिला अध्यक्ष आशा केडिया, उपाध्यक्ष रितु लडिया, प्रधानाध्यापिका ऋचा श्रीवास्तव यशोदा नगर सरस्वती स्कूल, मीडिया प्रभारी विनीता अग्रवाल के साथ ही सभी शिक्षक यशोदा नगर और दामोदर नगर सरस्वती स्कूल विद्या मंदिर उपस्थित रहे।

प्रांतीय समाचार : दिल्ली

शिष्टाचार भेंट

काठमांडू (नेपाल) से पधारे नेपाल के पूर्व सांसद, समर्पित समाज सेवक एवं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बिमल जी केडिया से दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधि मण्डल द्वारा शिष्टाचार भेंट।

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
- **Radiology**
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- **Cardiology**
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

With Best Compliments from :-

KISWOK INDUSTRIES PVT. LTD.

As ISO 9001 Company

Manufacturers & Exporters of

AUTOMOBILE CASTINGS, DUCTILE IRON PIPE FITTINGS,
GREY IRON CASTINGS & RAILWAY ITEMS

11, Brabourne Road, Kolkata – 700001
Tel : 2242-7920/7921
Email : info@kiswok.com, head.office@kiswok.com
Internet : www.kiswok.com

प्रांतीय समाचार : तेलंगाना

तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अभिनन्दन समारोह आयोजित

तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में बेगम बाजार में आयोजित अभिनन्दन समारोह में चार्टर्ड अकाउंटेन्ट्स की परीक्षा में सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले हैदराबाद के हेरम्ब धूत (माहेश्वरी), आठवाँ स्थान प्राप्त करने वाले शुभम तोष्नीवाल तथा शोभित दवे का अभिनन्दन किया गया।

अध्यक्ष रामप्रकाश भण्डारी ने कहा कि इस वर्ष हैदराबाद के मारवाड़ी समाज के छात्रों ने चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स की परीक्षा में सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रथम एवं आठवाँ स्थान प्राप्त कर हैदराबाद का नाम रौशन किया है। तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यालय में आयोजित अभिनन्दन समारोह के अन्तर्गत भारत वर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले हेरम्ब धूत (माहेश्वरी) का अभिनन्दन अध्यक्ष रामप्रकाश भण्डारी द्वारा किया गया। आठवाँ स्थान प्राप्त करने वाले छात्र शुभम तोषनीवाल का अभिनन्दन पूर्व अध्यक्ष रमेश कुमार बंग एवं लक्ष्मीनारायण राठी द्वारा किया गया। शोभित दवे का अभिनन्दन महेश कुमार बजाज द्वारा किया गया।

अवसर पर सीए मुरली मनोहर पलोड़, ओमप्रकाश भण्डारी, नरसिंगदास लोया, गिरधारीलाल डागा, विनोद कुमार बंग, प्रकाश लड्डा, नारायणदास सारड़ा, अमित लड्डा, कैलाश मंत्री, राजेश तोष्नीवाल, अजय भण्डारी, हेमन्त सारड़ा, नरसिंग चितलांगी, मनीष लोया, विशाल बजाज, श्रीराम जोशी, कृष्णा बिरला, सत्यनारायण मणियार, संदीप सारड़ा, कृष्णा सारड़ा, सम्पत तोष्नीवाल सालासर, विमसा बाई करवा, ज्योति तोष्नीवाल, पद्मा भण्डारी, प्रीति भण्डारी, इशिता भण्डारी, कुसुम झँवर एवं अन्य उपस्थित थे।

प्रांतीय समाचार : आंध्रप्रदेश

१२ जनवरी को स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष में 'यूथ क्लब बिजीपुरम' एवं 'मारवाड़ी सम्मेलन श्रीकाकुलम' मिलकर गरीब असहाय १५ से २० साल की आयु के १०० बच्चों को मकर संक्रांति के त्योहार पर कपड़े वितरण किया।

यह कार्यक्रम का आयोजन 'अंबेडकर ऑडिटोरियम स्टेडियम श्रीकाकुलम' मे हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भारत सरकार में सिविल एविएशन मिनिस्टर श्रीमान राम मोहन नायू जी उपस्थित थे।

यह कार्यक्रम मारवाड़ी सम्मेलन श्रीकाकुलम के सभी सदस्य एवं सभी मारवाड़ी भाइयों द्वारा तन, मन, धन के सहयोग से किया गया।

प्रांतीय समाचार : कर्नाटक

महिला परिधि द्वारा वृद्धाश्रम में सेवा कार्य

मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर, मारवाड़ी सम्मेलन महिला परिधि, बेंगलुरु (कर्नाटक) ने आश्रय सेवा ट्रस्ट, राजाजीनगर में वृद्धाश्रम दान अभियान आयोजन किया। इस अभियान के तहत बुजुर्गों को डायपर, किराना सामग्री, फल, दस्ताने और अन्य आवश्यक वस्तुएं प्रदान की गई।

सेवा कार्य परिधि की अध्यक्षः माया अग्रवाल, सचिव शालिनी अग्रवाल, कोषाध्यक्षः हेमलता संवरिया, सलाहकारः मंजू अग्रवाल (सुभाषजी), उपाध्यक्षः लता चौधरी, सह सचिवः वनीता अग्रवाल, सहायक सचिवः पल्लवी पोद्दार समिति सदस्यः हेमलता अग्रवाल, सविता गुप्ता, नेहा (उमेश) अग्रवाल, पूजा (मदन) अग्रवाल, पिंकदी अग्रवाल अन्य सदस्यः स्वाति अग्रवाल, सुमन शर्मा के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

शिष्टाचार भेंट

कर्नाटक मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधिमंडल ने असम के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण एवं सिंचाई मंत्री श्री अशोक सिंघल से मुलाकात की।

बाय से दाएं अशोक गोयल माया अग्रवाल गजेंद्र अग्रवाल, कर्नाटक मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष ओम प्रकाश पोद्दार, माननीय मंत्री श्री अशोक सिंघल, अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सुभाष अग्रवाल, कर्नाटक मारवाड़ी सम्मेलन की उपाध्यक्ष श्री रमेश भाववाला एवं श्री महेश अग्रवाल।

"आलो" अरूणाचल प्रदेश में नवीन शाखा का गठन

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंडल-सी के उपाध्यक्ष श्री छतरसिंह गिड़िया, शाखा एवं सदस्य विस्तार संयोजक श्री ओमप्रकाश पचार, सिलापथार शाखा के पूर्व अध्यक्ष श्री अनिल जी जैन, निवर्तमान अध्यक्ष श्री पवन जैन नार्थ लखिमपुर से अरुणाचल प्रदेश, भारत की सीमा क्षेत्र में, हरित प्रदेश के आलो में जहां १५-१८ समाज परिवार है वहां आलोंग मारवाड़ी समाज के साथ सम्मेलन का स्थापना दिवस मनाते हुए पूर्वोत्तर में सम्मेलन की ७५वीं शाखा के रूप में मारवाड़ी सम्मेलन आलो शाखा का गठन किया। २० आजीवन सदस्य बनाकर कार्यकारिणी का गठन किया। अध्यक्ष के पद पर श्री पारस जैन (बेद) एवं सचिव के रूप में श्री हुलास चंद जी प्रजापत एवं कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण करवा कर सम्मेलन परिवार को शानदार उपहार भेंट किया है।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा एवं समग्र टीम की ओर से आलोंग के समाज बंधुओं तथा मंडल-सी की टीम का सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन।

संक्षिप्त परिचय : श्री पारस मल जैन

श्री पारस मल जैन जी का जन्म दिनांक : ५ मार्च १९६९ में बिकानेर, राजस्थान के नोखा शहर में श्रीमती सुशीला देवी व स्वर्गीय चैनरूप जी जैन के घर हुआ। १९६९ में आपके पिताजी ने मेसर्स–के के एनप्राईज आलो नाम से व्यवसाय की शुरुआत की। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात १९८९ में अपने पिता के साथ उनके कारोबार में जुट गए। आपका विवाह दिनांक: १९ नवंबर १९९२ में श्रीमती परमेश्वरी देवी जैन से हुआ जो चाड़ी जोधपुर की रहने वाली थी। आपने अपने पिता के व्यवसाय को न केवल संभाला अपितु उसको बढ़ाया भी आज वर्तमान में गुवाहाटी महानगर में अपने बड़े पुत्र हर्ष जैन के साथ मेसर्स–प्रयाग सेल्स कार्पोरेशन के नाम से पूरे नार्थ ईस्ट के एक नामी डिस्ट्रीब्यूटर के रूप में कार्य कर रहें हैं। आपके दो पुत्र एवं एक पुत्री है।

आपश्री बचपन से ही समाज के सेवा कार्यों से जुड़े हुए हैं। आप सेवा भारती एवं आलो शिव मंदिर समिति के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। आप केवल व्यवसाय तक ही सिमित नहीं रहे बल्कि किसी भी सामाजिक कार्यों से पीछे नहीं हटे और समाज के प्रति हमेशा अपना कर्तव्य निभाया। आपने अरुणाचल प्रदेश के आलो जिले में मात्र दो घंटे के समय में न केवल सम्मेलन का शपथ ग्रहण करके आलो (अलेंग) शाखा का गठन किया अपितु एक साथ पच्चीस आजीवन सदस्य बनाकर प्रांत में सदस्यता फार्म भरवाकर सदस्यों की फीस भी जमा करवा दी। सम्मेलन आपके इस कार्य हेतु आपका हार्दिक अभिनंदन करता हैं।

उपलब्धियाँ

नवगछिया के खरीक बाजार निवासी इंडियन बैंक के पदाधिकारी श्री संजय कुमार लाठ तथा सुनीता लाठ की सुपुत्री श्रेया अग्रवाल ने भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट की फाइनल परीक्षा में पहले ही प्रयास में सफलता प्राप्त की है।

नवगछिया नगर निवासी कृष्ण कुमार यादुका और कविता यादुका के सुपुत्र संजू यादुका ने भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट की फाइनल परीक्षा में पहले ही प्रयास में सफलता प्राप्त की है।

मारवाड़ी भाई-बेहना सू निवेदन

आपा आपणो देश मारवाड़ (राजस्थान) तो छोड़ दिया हाँ, काई आपणी मारवाड़ी, आपणी मातृभाषा ने भी छोड़ देनो, खत्म कर देनो चावां हाँ। आपणा में अधिकतर माता-पिता आपणा बच्चा (टाबरा) सू हिंदी, इंग्लिश में बात करा हाँ और गर्व महसूस करा हाँ, आज हर सिंधी रा बच्चा सिंधी बोले है, मराठी का मराठी, अटातांई के अरबपति अंबानी का बच्चा भी गुजराती में ही बात करे है, परंतु आज री जेनरेशन मारवाड़ी बच्चा ने तो मारवाड़ी आवे ही नहीं है, काई आपण मारवाड़ी बोलना में शर्म आवे है। इन बच्चा का हक है मारवाड़ी बोलनो और मारवाड़ी सीखनो तो कृपया कर गर्व सू मारवाड़ी में बात करो, कम से कम मां-पिता जी, भाई-भोजाई, चाचा-चाची जी, सगला घर का सू कोई एक तो बात शुरू करो।

आपणी मारवाड़ी भाषा ने विलुप्त होना सू बचाओ!

शाखा समाचार : पश्चिम बंग

चक्षु परिक्षण शिविर

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, दुर्गापुर पश्चिम शाखा एवं दुर्गापुर सेवा समिति के तत्वावधान में रविवार, दिनांक १२ जनवरी २०२५ को दुर्गापुर सेवा समिति, जोनल सेंटर, दुर्गापुर के प्रांगण में नि:शुल्क नेत्र परीक्षण एवं स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया।

इस शिविर में कुल ३०५८ रोगियों की जांच की गई। जिसमें नेत्र जांच कुल १८९० रोगी (मोतियाबिंद की पहचान २३२ रोगी) जिनका ऑपरेशन उनको दिए गए समय पर नि:शुल्क किया जाएगा।

नेत्र जांच के बाद जिन रोगियो को चश्मे की जरूरत थी, उनको नि:शुल्क चश्मा और जिन रोगियों को दवा की जरूरत थी, उनको नि:शुल्क दवायें उपलब्ध करवाई गई।

स्वास्थ्य जांच ११६८ रोगियों की हुई। जिसमें ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, ई.सी.जी, गाइनोकोलॉजिस्ट, न्यूरोसर्जन, जनरल फिजिशियन एवं विभिन्न प्रकार के विशेषज्ञों की व्यवस्था की गई थी।

जो बुजुर्ग रोगी थे, जिनकी उम्र ६० साल या उससे अधिक थी, ऐसे ६८० रोगियों को नि:शुल्क कंबल वितरण किया गया।

सभी आने वाले रोगियों एवं उनके साथ आने वाले मददगारों के लिए नि:शुल्क भोजन, पानी एवं चाय की व्यवस्था की गई थी।

हेल्थ इंश्योरेंस के लिए एक काउंटर भी लगाया गया था।

आने वाले मेहमानों ने इतनी सुंदर व्यवस्थित तरीके से आयोजित कार्यक्रम की बहुत-बहुत सराहना की।

सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) द्वारा नेत्र परीक्षण, सुदर्शनी हॉस्पिटल, रानीगंज एवं दुर्गापुर पीपल ऑफ माय लाइफ सोसायटी, रानीगंज के द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच की सेवाएं प्रदान की गई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दुर्गापुर नगर निगम की प्रशासनिक चेयरपर्सन श्रीमती अनिंदिता मुखर्जी, ए.डी.डीए के चेयरपर्सन श्री कविदत्ता दुर्गापुर की पूर्व पार्षद धृति जालान, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री दिनेश सराफ एवं संगठनमंत्री श्री उमेश खंडेलवाल, आमंत्रित इतिथियों में दुर्गापुर चेंबर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री के अध्यक्ष चंदन दत्त सचिव विजय गुप्ता बांकुड़ा शाखा के अध्यक्ष श्री नरेश शर्मा, सचिव श्री मनोज बाजोरिया, सहसचिव श्री बिक्रम गोयनका उपस्थित थे। सभी अतिथियों को दुपट्टा पहना कर तथा स्मारक लिपि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शाखा समाचार : झारखंड

ग्रामीण अंचल में कंबल वितरण

दुमका जिला मारवाड़ी सम्मेलन के नव पदस्थापित अध्यक्ष श्री हरि शंकर मोदी जी की अध्यक्षता में तथा श्री आशीष अग्रवाल जी के संजोजकत्व में सम्मेलन सदस्यों द्वारा सुदूर ग्रामीण अंचलों में बच्चों के बीच कपड़े, बिस्कुट, केला आदि वितरण एवं जरूरतमंदों के बीच शीतलहरी के बचाव हेतु १५० से ज्यादा कंबल का वितरण किया गया। श्री बिनोद सिंघानियां, श्री राजेश सोंथालिया तथा श्री राज कुमार मोदी द्वारा उपरोक्त कंबल सम्मेलन की वितरण हेतु प्रदान किये गए।

इस कार्यक्रम में श्री हरि शंकर मोदी, श्री बिनोद सिंघानिया, श्री अरुण मोहंका, श्री राजेश संथालिया, श्री रंजीत सिंघानियां, श्री प्रेम बजाज, श्री प्रदीप अग्रवाल, श्री ओम प्रकाश झुनझुनवाला, श्री आशीष अग्रवाल, श्री सुदीप अग्रवाल, श्री बिष्णु दारुका, श्री सज्जन पटवारी तथा राजेंद्र मेहरिया आदि सदस्यों ने अपनी सहभागिता प्रदान की।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट
हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

संस्कार संरक्षण से ही राष्ट्र संरक्षण होगा

– श्री वासुदेव देवनानी
अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा

विश्व के कोने-कोने में बसे, अपनी योग्यता, क्षमता, उर्जा से समाज को दिशा देने वाले, हर जगह अपनी उपस्थिति और अस्तित्व को दर्ज कराने वाले, हमारे प्यारे राजस्थान की माटी की सौंधी महक से संपूर्ण विश्व को महकाने वाले, व्यापार की बारीकियों को जानने वाले आप सभी मारवाड़ी बंधु-बांधवों को मैं वंदन करता हूँ और आपके धैर्य, आत्मविश्वास, आगे बढ़ाने की चाह और आप द्वारा करवाए गए परोपकार के कार्यों के लिए बारम्बार साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

आज आपने अपने इस भाई को अपने इस सम्मेलन में बुलाकर जो मान-सम्मान दिया है उसका दिल से धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ।

"जहाँ ना पहुँचे बैलगाड़ी वहाँ पहुँचे मारवाड़ी।" यह कहावत यूँ हीं नहीं बनी हैं, यह आपके विश्वव्यापी प्रसार और उपलब्धता के कारण सम्भव हुई है।

वैसे मैं आपको निवेदन कर दूँ कि मैं सिंधी हूँ और सिंधी तथा मारवाड़ी की संस्कृति में अधिक अंतर नहीं है, अंतर महज इतना ही है कि हमने हमारी जन्मभूमि को दुखी मन से, आतताइयों के अत्याचार से छोड़ा था और आपने अपनी मर्जी से व्यापार की बुलंदियाँ छूने के लिए, अपनी माटी को छोड़ा हैं। लेकिन जब आपका मनचाहे तब अपनी माटी को चूम सकते हैं, कभी बाबा श्याम, कभी जीण माता, कभी सालासर बालाजी, कभी माता शाकम्बरी के दर पर पहुँचते हैं और अपनी माटी को नमन करते हैं। यह स्वतंत्रता हमारे लिए नहीं है आज हमारी माटी हमारे पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान में है इसलिए यह हमारा दुख है आपको यह सुख है।

मित्रों राजस्थान में एक कहावत प्रचलित है – **मारवाड़ी, आलू, टमाटर** एक से है और विश्व में हर जगह पाए जाते हैं और अपनी घुल-मिलकर रहने की प्रवृत्ति से सभी को प्रभावित करते हैं, राजस्थान का मान बढ़ाते हैं।

आज कनोड़िया गोयनका, जालान, बिड़ला, लोहिया, तोदी, कितने औद्योगिक घराने राजस्थान ने दिए हैं। यह सारे घराने उनकी निष्ठा, समर्पम, धैर्य, आत्मविश्वास की संस्कृति का परिणाम है। हम सबके लिए अनुकरणीय है।

१९३५ में अंग्रेजी पराधीनता के समय में आपके बुजुर्गों द्वारा स्थापित यह मारवाड़ी सम्मेलन और आज यह ९०वाँ स्थापना दिवस समारोह हम सबके प्रगाढ़-आत्मीय रिश्तों का जीता-जागता उदाहरण है।

आपकी प्रगाढ़ता, मेहनत, कर्मठता, को समय-समय पर विभिन्न राष्ट्रनायकों ने नमन-वंदन किया है। यह आपके सार्वजनिक महत्व को दर्शाने वाला विषय है।

विभिन्न प्रदेशों में बसे मारवाड़ियों को विदेशी मानने वाले अंग्रेजी श्वेत पत्र का विरोध कर, यह सम्मेलन खड़ा करने वाले प्राण पुरुष स्व. श्री ईश्वरदास जालान जी, स्व. श्री कालीप्रसाद खेतान जी, स्व. श्री बद्रीप्रसाद गोयनका जी को आज हम वंदन करते हैं, जिनका लगाया हुआ पौधा आज एक विशाल वटवृक्ष के रूप में हमारे सामने है।

इस सम्मेलन ने संगठन, व्यापार, राजनीति, शिक्षा और चिकित्सा जैसे विषयों पर काम कर आज अनेकानेक सुधारवादी कार्य किए हैं।

आज यह सम्मेलन समाजिक एकता, सुरक्षा, समाज सुधार, कुरीति उन्मूलन, विधुर विवाह, बाल विवाह का विरोध, अस्पृश्यता का विरोध, देहज प्रथा का विरोध, वैवाहिक समारोह में आडम्बर, दिखावा और फिजूल खर्ची को रोकना, शिक्षा और संस्कारों पर बल देना आपके इस विराट सम्मेलन के उद्देश्य रहे हैं इसके लिए आप साधुवाद के पात्र हैं।

समाज सेवा, सामाजिक उत्थान और समाज सुधार मूल कार्यक्रमों की श्रृंखला में आप द्वारा युवाओं के रोजगार के लिए –
रोजगार सहायता उपसमिति का गठन किया जाना
उच्च शिक्षा के लिए कोष की स्थापना करना
समाज सुधार एवं कुरीति उन्मूलन के लिए निरन्तर प्रयास किया जाना
अपनी-भाषा, अपनी संस्कृति, अपने सदाचारों पर गर्व करने वाला यह समाज इस मंच के माध्यम से मायड़ भाषा का प्रचार-प्रसार कर रहा है। इसके लिए "सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार" और "केदारनाथ, भागीरथी देवी, कानोडिया राजस्थानी भाषा, बाल साहित्य पुरस्कार" दिया जाना।
मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा श्रेष्ठ कार्य के लिए मारवाड़ी व्यक्तित्व सम्मान द्वारा नवाजा जाना आपके समाज के लिए महत्वपूर्ण है।
समाज सेवा आपके स्वभाव में है राजस्थान के मरूस्थलीय इलाकों में आपने शिक्षण संस्थाएं, चिकित्सालय, प्याऊ, बावडी, कुँए आदि परोपकार और पुण्य के लिए बनवाए हैं। बिड़ला जी की BITS (Birla Institute of Technology and Science) पिलानी आज इसका बड़ा उदाहरण है।
आपके सेवा क्षेत्र में योगदान के लिए दो वर्ष के अन्तराल पर "५१ हजार रू की राशि" का भंवरमल सिंधी समाज सेवा पुरस्कार प्रदान किया जाता रहा है। इसके लिए आप साधुवाद के पात्र हैं।
संस्कार और संस्कृति की रक्षा के लिए आपके दिए गए संस्कार और शिक्षा बच्चों को सद्नागरिक बनाती है इसके लिए भी आप साधुवाद के पात्र हैं।

साथियों, आज एक परिवार में ही विवाद और मतभेद देखे जा सकते हैं तो समाज तो बहुत बड़ा होता है। ऐसे में विवादों को निपटने के लिए आपके द्वारा आयोजित की जाने वाली महापंचायत हमारे प्राचीन भारत के पंचपटेलों की अवधारणा को सिद्ध करती है।

विवाह सम्बन्धों के लिए आप निरन्तर प्रयास करते हैं, राष्ट्र में होने वाली विभिन्न आपदाओं के समय आप यथोचित सहयोग करते हैं, चिकित्सा के क्षेत्र में आप विभिन्न वर्गों के जरूरतमन्द लोगों के लिए चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराते हैं इसके लिए आप साधुवाद के पात्र हैं।

लेकिन आपकी यह सदाशयता, आपके उन्नत विचार, आपका परोपकार और पुण्य का भाव सदैव बना रहे ईश्वर से मैं यही प्रार्थना करता हूँ।

कबीर जी ने कहा है –

"चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी ना घट्यिो नीर
दान दिए धन ना घटे, कह गए दास कबीए।।

रामायण में तुलसीदास जी ने भी लिखा है –

"परहित सरस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई"।।

तो मैं आपको यह कह रहा हूँ आपके पूर्वजों के इन चिरंतन संस्कारों को बनाए रखें। आपने आज इस शानदार आयोजन में मुझको आमंत्रित किया इसके लिए मैं आप सभी का आभारी हूँ।

एक बार पुनः आप सभी को धन्यवाद, आभार, राम राम।

जय हिंद, जय भारत।।

आलेख

दलदल में धंसता समाज, कौन लगायेगा पार

– डॉ. संजय हरलालका
निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री
अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन

समाज सुधार, संस्कार, आदर्श, व्यवहार, मान-सम्मान जैसे अनेकों शब्द अपनी-अपनी परिभाषा में चलन में तो हैं लेकिन सामाजिक रूप से लुप्त होते प्रायः दिख रहे हैं। हालांकि कुछ लोग इसे नकारात्मक सोच भी कह सकते हैं लेकिन हकीकत से मुँह मोड़ना यथार्थ को झुठलाना ही कहा जा सकता है।

जी हां, मैं बात कर रहा हूँ मारवाड़ी समाज के उन हालातों की, जिन पर अब चर्चा तो करते हैं, चिन्ता भी जाहिर करते हैं, लेकिन आत्मसात करने के मामले में कभी पीछे हट जाते हैं तो कभी हटना पड़ता है।

हमारे पूर्वजों ने जिस सामाजिक संरचना की नींव रखी थी, आज के चकाचौंध वाले आर्थिक युग में वह कमजोर पड़ती या यह कहें कि मृत प्रायः होती जा रही है। अगर उस सोच पर कोई चलना भी चाहे तो दूसरों की तो छोड़िए, अपने ही लोग टांग खिंचाई में लग जाते हैं। क्योंकि सभी नदी की धारा की तरफ बहना चाहते हैं, जिसमें नाविक को पतवार उठाने का परिश्रम नहीं करना पड़ता। हालांकि नाविक को तो यह अहसास होता है कि यह धारा पानी के बवंडर की तरफ ले जा रही है वह पतवार का रूख मोड़ लेता है। लेकिन हम अपने जीवन में चाह कर भी ऐसा नहीं कर पाते। एक बार जिस तरफ रूख कर लिया, उसी दिशा में बहना मजबूरी हो जाता हैं, और अगर किसी ने रूख मोड़ने की चेष्टा की तो उसे समाज के साथ-साथ अपनों के ही कटु वचनों से गुजरना पड़ता है।

यूँ तो अनेक गलत परम्पराओं को हमनें जन्म दे दिया है, लेकिन यहां सिर्फ एक की ही बात करता हूँ, वह है तलाक यानि सम्बन्ध विच्छेद।

विवाह के बाद लड़कियों पर जघन्य अत्याचार के अनेक किस्से आज भी इतिहास में दर्ज हैं। और इसी के साथ वे आन्दोलन भी इतिहास का हिस्सा हैं, जो इनके खिलाफ तथा रोकथाम हेतु हुए। लड़कियों को उच्च शिक्षित बनाने के पीछे शायद एक उद्देश्य यहीं रहा होगा कि वे स्वावलम्बी बनें, अच्छे-बुरे की पहचान करें, खुद विवेक से निर्णय ले सकने की उनमें क्षमता हो, आदि...आदि। इसके पीछे अवधारणा तलाक की कतई नहीं रही होगी। बल्कि तलाक जैसे शब्दों को तो समाज में अभिशाप माना जाता था।

समय बीता, इसका सुफल सामने आया। हमारे समाज की बच्चियां सिर्फ शिक्षित ही नहीं, उच्च शिक्षित होने लगीं। घर से बाहर कदम रखा और नौकरी, पेशे या व्यापार में अपना हुनर दिखाने लगीं। यहां तक सब ठीक था। लेकिन इसका दूसरा अपभ्रंश रूप जो आज समाज के सामने आया है, वह बेंगलुरु के इंजीनियर अतुल सुभाष मोदी की परिणति के रूप में सामने है। पत्नी निकिता सिंघानिया, सास निशा सिंघानिया तथा भाई अनुराग सिंघानिया आदि पर आरोपों की झड़ी लगाकर एक तरोताजा युवक ने पूर्ण होशो-हवास में न सिर्फ जान दे दी, साथ ही पूरे सिस्टम की कलई भी खोल दी। कर भला तो हो भला की तर्ज पर अंत भला तो सब भला तो यहां नहीं कह सकते किन्तु इतना जरूर कहना चाहूँगा कि अतुल सुभाष मोदी ने आत्महत्या नहीं, समाज और सिस्टम को झकझोंरने तथा आंखें खोलने के लिए अपना 'बलिदान' दिया है।

उपर बात तलाक की कर रहा था। तो बुरे वक्त का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज १०० में ६० फीसदी मामले तलाक के हो रहे हैं। कभी इने-गिने केस होते थे, जिनकी संख्या बढ़ते-बढ़ते आज यहां तक आ पहुंची है, जैसे लगता है कि तलाक अब 'फैशन' का रूप धारण करते जा रहा है।

आज की युवा पीढ़ी में अगर किसी का प्रेमी या प्रेमिका नहीं है तो उसे बैकवर्ड माना जाता है, यह सच्चाई है। माता-पिता भी बच्चों के विवाह से पहले पूछ लेते हैं कि तुम्हारा किसी से कोई प्रेम वगैरह है क्या?

सगाई होने एवं विवाह पर बंटने वाले कार्ड-मिठाई का परिवर्तित रूप भी समाज के सामने आने लगा है, जो कि तलाक के बाद का सीन है। चूंकि मेरे समक्ष ऐसा वाकया आ चुका है, इसलिए ही इसका जिक्र यहां कर रहा हूँ। करीब दो वर्ष पहले एक मिठाई का डिब्बा किसी परिचित ने मेरे घर भेजा। जब मैंने फोन कर जानना चाहा कि किस खुशी में मिठाई बंट रही है तो उनका जवाब सुनकर हैरानी कम आश्चर्य ज्यादा हुआ। उन्होंने बताया कि आपसी सहमति से उनके बेटे का तलाक हो गया है, जो कि तीन वर्षों से कोर्ट-कचहरी के चक्कर में लम्बित था, अतः कुल देवता की सवामणि लगाई है। उसी का प्रसाद भेजा हूँ।

यह सुनकर मैं सोचने के लिए मजबूर हो गया कि कभी विवाह पर बंटने वाली मिठाई तलाक होने पर बंटने लगी है?

एक और किस्से का उल्लेख यहां सचित्र कर रहा हूँ। सगाई होने पर खुशी से इसकी सूचना अपने परिजनों तथा पहचान वालों तक पहुंचाने की परम्परा अब सगाई टूटने पर कार्ड के जरिए पहुंचाई जाने लगी है, जिसका नमूना मैंने व्हाट्सअप पर मिले ऐसे ही एक ई-कार्ड के रूप में यहां दिया है, जिसमें इंगेजमेन्ट टूटने पर लड़के-लड़की की फोटो सहित सूचना प्रेषित की गई।

ऐसी परिस्थिति में अब यही लिखकर चिन्ता जाहिर कर सकता हूँ कि –

इंसान ही इंसान को डंस रहा,
सांप गोने में बैठा हंस रहा...
मुखौटा बनकर रह गये हम,
कैसे होंगे ये किस्से खतम?

राजस्थानी कवियों ने मन मोहा

माहेश्वरी पुस्तकालय, कोलकाता के १११वें स्थापना दिवस पर, संस्थापकों को नमन करते हुए, उनकी मातृभाषा राजस्थानी कवि सम्मेलन स्थानीय कलामंदिर प्रेक्षागृह में किया गया। प्रबुद्ध चिन्तक सीताराम शर्मा ने मातृभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रधान अतिथि विकास माधोगढ़िया ने आयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन, मायड़ भाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं। माहेश्वरी सभा के सभापति बुलाकीदास मिम्माणी ने सभा और उसकी शाखाओं की गतिविधियों की जानकारी दी। समारोह अध्यक्ष, कवयित्री शकुन्तला करनाणी (चेन्नई) ने “निज भाषा” से अपनी संस्कृति और पहचान से जुड़ाव की बात करते हुए, युवा पीढ़ी को मायड़ भाषा से जोड़ने की आवश्यकता बताई। इससे पहले, वनबंधु समाज सेविका शान्ता सारडा ने मां सरस्वती के चित्र पर शतदल अर्पण कर, समारोह का उद्घाटन किया। पुस्तकालय के अध्यक्ष, विश्वनाथ चाण्डक ने आगन्तुकों का स्वागत किया तथा उपाध्यक्ष, राधेश्याम झँवर ने धन्यवाद दिया।

पुस्तकालय की शतदल अर्पण कार्यक्रम शृंखला के अन्तर्गत राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए जनजागरण अभियान के रूप में, मायड़ भाषा हेतु शीर्षक कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए पुस्तकालय मंत्री संजय बिन्नाणी ने बताया कि पुस्तकालय के संस्थापकों को प्रणाम निवेदित करने हेतु कवि सम्मेलन आयोजित किया गया है। इस अवसर को रेखांकित करते हुए, राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के लिए संघर्षरत लाडेसर रतन शाह को “मायड़ भाषा हेतु सम्मान” से सम्मानित किया गया।

राजस्थान सूचना केन्द्र कोलकाता के प्रभारी एवं सूचना व जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान सरकार के सहायक निदेशक हिंगलाजदान सतनूँ ने मायड़ भाषा राजस्थानी भाषा-संस्कृति और कवि सम्मेलन के महत्व पर प्रकाश डाला। अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन के **राष्ट्रीय अध्यक्ष, शिवकुमार लोहिया** ने **कविश्री कल्याण सिंह शेखावत** को **महाकवि अम्बु शर्मा स्मृति नैणसी सम्मान** प्रदान किया। राजस्थानी स्तम्भ लेखक और कवि बंसीधर शर्मा ने कविश्री कैलाश मण्डेला को भगवती प्रसाद चौधरी स्मृति तुलसी-चन्नण सम्मान प्रदान किया। कवयित्री पुष्पा सोनी (गुवाहाटी) ने कवयित्री मोनिका गौड़ को जोशी निर्भीक स्मृति गवरल सम्मान प्रदान किया। राजस्थान परिषद् के महामंत्री अरुण मल्लावत ने कविश्री कैलासदान कविया को गोपालकृष्ण तिवाड़ी स्मृति मायड़भौम सम्मान प्रदान किया। माहेश्वरी सभा के उपमंत्री अशोक चाण्डक ने कविश्री शंकरसिंह राजपुरोहित को चम्पालाल मोहता “अनोखा” स्मृति रजवण सम्मान प्रदान किया। सम्मान राशि के रूप में प्रत्येक कवि को ₹ पच्चीस हजार प्रदान किये गये। कार्यक्रम को सफल बनाने में अशोक लढ्ढा, राजकुमार डागा, संगीतालय मंत्री महेश दम्माणी, जयन्त डागा, मुकेश बिन्नाणी, विनोद डागा, पञ्चानन भट्टड़, किशोर दम्माणी, देवेन्द्र बागड़ी, आदित्य बिन्नाणी आदि सक्रिय रहे। परचम के संस्थापक मुकुंद राठी, सभा मंत्री पुरुषोत्तम दास मूँधड़ा, सेवा समिति मंत्री अरुण सोनी, माहेश्वरी बालिका विद्यालय मंत्री राकेश मोहता, समाजोत्थान समिति मंत्री मनमोहन राठी सहित औपचारिक भाग का संचालन संजय बिन्नाणी ने तथा कवि सम्मेलन का संचालन, कैलाश मण्डेला ने किया।

म्हैं साथ खड़ी हूं नित थारै, सोगन है साच छुपाई ना

(एक माँ री आपरै बेटै नैं भोळावण)

– डॉ. गजादान चारण ‘शक्तिसुत’

।।०१।।

सिद्ध करै सुरराय काम सब, उठतां धोक लगा लीजे।
सिंझ्या पड़तां ही थूं म्हानैं दिन भर री बात बता दीजे।
जे म्हां दोनां सूं संकै तो बहनड़ सूं बंतळ कर लीजे।
बा जुग री चाल पिछाणै है, उणरो अणकहियो मत कीजे।
जे भूल-चूक कीं व्है ज्यावै, म्हैं हूँ नीं थूं घबराई ना।
म्हैं साथ खड़ी हूं नित थारै, सोगन है साच छुपाई ना।

।।०२।।

थूं समझदार है, हूँ जाणूं, पण ऊमर असर दिखावैली।
मन में संगळियां रै साथै, रळियां करबा री आवैली।
मितराई करजे मन-भाई, पण करजे थूं कुटळाई ना।
रिश्तां री पावन रमझोळां, धोखै रो झोळ चढ़ाई ना।
मन-मगज भिड़ै, गेलो भूलै, थूं बात करी, सरमाई ना।
म्हैं साथ खड़ी हूं नित थारै, सोगन है साच छुपाई ना।।

।।०३।।

ऐ फिरै ‘हीरोइन-हीरो’ बण, बै जाबक ‘जीरो’ है बेटा।
इण नकी स्वार्थी नगरी में, नहीं कोई कींरो है बेटा।
ऐ छूत बीमार्यां रा छाता, आतां-जातां नैं बिलमावै।
चोरी जारी मदपान द्यूत, गांजा सुलफा सूं भरमावै।
जे राह चालतां चिप ज्यावै, कर दूर, गळै लटकाई ना।
म्हैं साथ खड़ी हूं नित थारै, सोगन है साच छुपाई ना।।

।।०४।।

दो बात बाँध कर गाँठ राख, कुछ भी हो वां सूं चूक मती।
कुळ-वाट जठै नीं लेज्यावै, उण ठौड़ कदैई ढूक मती।
हिय रै आँगण रो कुमुद खिलै, वो चाँद मिलै बरजे मत ना।
पण उडगण जुगनू दिवलां नैं, हिय-आंगणियैं धरजे मत ना।
कुल जूण जिकां पर नाज करै, बै काज कदै ठुकराई ना।
म्हैं साथ खड़ी हूं नित थारै, सोगन है साच छुपाई ना।।

।।०५।।

हर बात थारी में म्हैं हामी, भरती आई, फिर भर ल्यूंली।
पण बहू जात सूं बारै री, ल्यावण में साथ नहीं द्यूंली।
जे ल्यासी तो कीं जोर नहीं, बाकी रो जीवण जहर हुसी।
परकत रै सगळै कहरां सूं, मोटो वो म्हां हित कहर हुसी।
जाती में जो भी रचै थनैं, थूं कहजे, बात दबाई ना।
म्हैं साथ खड़ी हूं नित थारै, सोगन है साच छुपाई ना।।

।।०६।।

जो मिनख कौम सूं कट ज्यावै, वो किनको डोर कट्योड़ो व्है।
उणरी भावी में ठौड़-ठौड़, लिखियो अणचींत्यो फोड़ो व्है।
जद तक पद पॉवर पइसा व्है, तद ताई समझ नहीं आवै।
पण हाण हट्यां, अबखी आयां, बै लोग अणूता पिछतावै।
असली आभासी एक समझ, अणमोली जूण गमाई ना।
म्हैं साथ खड़ी हूं नित थारै, सोगन है बात छुपाई ना।।

प्यारो राजस्थान

राजस्थानी लोगों को छोड़कर शेष दुनिया को लगता है कि राजस्थान में पानी नहीं है और यहाँ खून सस्ता व पानी महँगा हैं...

जबकि यहाँ सबसे शुद्धता वाला पानी जमीन में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

राजस्थान के लोगों को पूरे विश्व में सबसे बड़े कंजूस (कृपण) समझा जाता है...

जबकि पूरे भारत के ९५% बड़े उद्योगपति राजस्थान के हैं, राम मंदिर के लिए सबसे ज्यादा धन राजस्थान से मिला है...

राम मंदिर निर्माण में उपयोग होने वाला पत्थर भी राजस्थान का ही है..!

राजस्थान के लोगों के बारे में दुनिया समझती है, ये प्याज और मिर्च के साथ रोटी खाने वाले लोग हैं...

जबकि पूरे विश्व मे सर्वोत्तम और सबसे शुद्ध भोजन परम्परा राजस्थान की हैं...

पूरे विश्व मे सबसे ज्यादा देशी घी की खपत राजस्थान में होती हैं,

यहाँ का बाजरा विश्व के सबसे पौष्टिक अनाज का खिताब लिये हुए है..!

राजस्थानी लोगों को छोड़कर शेष दुनिया को लगता है कि राजस्थान के लोग छप्पर और झोपड़ियों में रहते हैं इन्हें मकानों की जानकारी कम हैं...

जबकि यहाँ के किले, इमारतें और उन पर अद्भुत नक्काशी विश्व में दूसरी जगह कहीं नही हैं...

यहाँ अजेय किले और हवेलियाँ हजारों वर्ष पुरानी हैं...

मकराना का मार्बल, जोधपुर व जैसलमेर का पत्थर अपनी अनूठी खूबसूरती के कारण विश्व प्रसिद्ध हैं!

राजस्थान में चीन की दीवार जैसी ही दूसरी उससे मजबूत दीवार भी है जिसे दुनिया में पहचान नहीं मिली..!

राजस्थानी लोगों को छोड़कर शेष दुनिया को लगता है कि राजस्तान में कुछ भी नहीं...

जबकि यहाँ पेट्रोलियम का अथाह भंडार मिला है... गैसों का अथाह भंडार मिला है...

यहाँ कोयले का अथाह भंडार मिला है..!

अकेले राजस्थान में यहाँ की औरतों के पास का सोना इकट्ठा किया जाए तो शेष भारत की औरतों से ज्यादा सोना होगा।

सबसे ज्यादा सोने की बिक्री भी राजस्थान के जोधपुर में होती हैं!

राजस्थान के जलवायु के बारे में दुनिया समझती है यहाँ बंजर भूमि और रेतीले टीले हैं जहाँ आँधियाँ चलती रहती है...

जबकि राजस्थान में कई झीलें, झरने और अरावली पर्वतमाला के साथ रणथम्भौर पर्वतीय शिखर हैं जो विश्व के टॉप टूरिज्म पैलेस हैं, इसके अलावा राजस्थान में झीलों से निकला नमक शेष भारत में ८०% नमक की आपूर्ति करता है जो १००% शुद्ध प्राकृतिक नमक है, इसके अलावा भी बहुत सारी ऐसी बातें हैं जिन्हें दुनिया नहीं जानती और यह सब गलत शिक्षा नीति की वजह से राजस्थान का नकारात्मक चरित्र गढ़ा गया जिसे दुनियाभर में सच समझा गया..!

राजस्थान में बहन को प्यार से 'बाईसा' कहा जाता है,

यहाँ चार बाईसा हुई जिन्हें हर राजस्थानी बाईसा कहकर ही सम्बोधित करते हैं...

मीरां बाई, करमा बाई, सुगना बाई, नानी बाई और मीरां ने ईश्वर को प्रेम भक्ति से ऐसा वशीभूत किया कि ईश्वर को आना पड़ा..!

करमा बाई ने निष्ठा भक्ति से ईश्वर को ऐसा अभिभूत किया कि ईश्वर को करमा के हाथ से खाना पड़ा...

सुगना बाई ने राजस्थान की पीहर और ससुराल परम्परा का ऐसा अनूठा स्त्रीत्व भक्ति पालन किया कि ईश्वर को उनका उद्गार सुनना पड़ा और नानी बाई ने ईश्वर की ऐसी विश्वास भक्ति की की ईश्वर को उनके घर आना पड़ा।

ये सब इसी युग में वर्तमान में हुआ जिनकी भक्ति आस्था और निष्ठा को राजस्थान के हर मंच से गाया जाता है...

नारी भक्ति का ऐसा उदाहरण शेष विश्व में और कहीं नहीं।

यहाँ राजस्थान की बलुई मिट्टी पूनम की रात में कुंदन की तरह चमककर स्वर्ण का आभास कराती हैं...

इन्ही पहाड़ो की वजह से इसे 'मरुधरा' कहा जाता है..!

राजस्थान का इतिहास गर्व से लबरेज और यहाँ का जीवन सबसे शुद्ध है..!

कण-कण वंदनीय और गाँव-गाँव एक इतिहास में दर्ज कहानियों पर खड़ा है..!

आनंद के चर्मोत्कर्ष पर आज आपको मरुधरा के दर्शन करवाते है...

जो प्रकृति के बेहद करीब है।

इसी राजस्थान को देखने, पधारो_म्हारे_देश

राजस्थान खास क्यों हैं:–

१. भारत के १०० सबसे अमीर व्यक्तियों में से ३५ राजस्थानी व्यापारी हैं।
२. दंगो में हज़ारो लोग मारे गए हैं लेकिन राजस्थान में १ भी नहीं..!
३. राजस्थान अकेले इतने सैनिक देश को देता है जितना केरला, आन्ध्र-प्रदेश और गुजरात मिलकर भी नहीं दे पाते......!!
४. कर्नल सूबेदार सबसे ज्यादा राजस्थान से है...!!
५. उच्च शिक्षण संस्थानों में राजस्थानी इतने हैं कि महाराष्ट्र और गुजरात के मिलाने से भी बराबरी नहीं कर सकते...........
६. राजस्थान अकेला ऐसा राज्य है जहाँ किसान कृषि कारणों से आत्म-हत्या नहीं करतें जैसा कि मीडिया अन्य राज्यों में दिखाता है, जबकि सबसे अधिक सूखा यहाँ पड़ता है, क्योंकि राजस्थान में बुज़दिल नही दिलेर पैदा होते है...!!
७. आज भी राजस्थान में सबसे ज्यादा संयुक्त परिवार बसते है...!!

बहु की अपने ससुर को हृदयस्पर्शी श्रद्धांजलि

एक बेटी की तरह ससुर जी को भगवान मानकर देखभाल करने का सौभाग्य मिला। हकीकत में हम भगवान को तो सिर्फ एक दो बार कुछ क्षण अगरबत्ती कर या नमस्कार कर अपने काम लग जाते हैं। लेकिन ससुर जी की सेवा इतने सालों तक करते करते ये भगवान के स्वरूप ही लगने लगे।

मेरे ससुर जी मोबताराम जी ८७ साल पूरे करके संसार से विदा हुए। गाँव मंगले की बेरी से मजदूरी की आस में बाड़मेर आए। मजदूरी और चपरासी की नौकरी करते-करते सत्संगो में जाने लगे। मारवाड़ के प्रसिद्ध भजनी दानजी के शुरुआती साथी बने।

नशे पते से दूर सादगी भरे जीवन में उस समय शहर से बाहर वीराने में बबूल की झाडीयों के बीच एक प्लाट लिया। दो कमरे बना कर संतुष्टी से जीवन व्यतीत किया। पिछले कुछ वर्षो तक चारपाई कुर्सियों की बुनाई करते रहे।

रमा देवी

अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त राजस्थानी महिला, बाडमेर

जब मैं ससुराल आई और घर परिवार की आर्थिक परिस्थितियों में सुधार करने की कोशिश की तो रूढ़िगत मानसिकता ने जब रास्ता रोका तो मैं किराए का कमरा लेकर अपने सपने पूरे करने के लिए परिवार से अलग होने पर मजबूर हो गई।

समय गुजरा। आर्थिक रूप से थोडी ठीक हुई तब वापस सास ससुर जी के साथ रहने लगी।

धीरे-धीरे मेरे काम की व्यस्तता बढ़ने लगी। देश विदेश में काम बढ़ा। लोगो ने ससुर जी को भड़काने के प्रयत्न किए लेकिन वो उस समय मुझे पूर्ण रूपेण आशीर्वाद दे चुके थे।

जब भी कार्यक्रम की खबर अखबार में पढ़ते तो सुबह-सुबह मुझे आवाज देकर कहते बेटा तुमारा नाम अखबार में आया हैं। मुझे उनकी इस पुकार में एक नवीन ऊर्जा मिलती महसूस होती।

पिछले कुछ सालो में उम्र की अधिकता से खाना खिलाने और उठाने बिठाने की कभी-कभार मदद करनी पड़ती तो मुझे और देवर-देवरानी को कहते बेटा अब मैं तुम लोगो को तकलीफ दे रहा हूँ जो मैं नहीं चाहता।

पहले ससुर जी से रिवाज के हिसाब से बात नहीं करती थी। देखभाल की जरूरत बढ़ने लगी और उनका जिद्दी स्वभाव जब आने लगा तो बात करने की जरूरत आन पड़ी।

बच्चो जैसे जिद्दी हो जाते थे। खाना नहीं खाते। मुझे जाकर बोलना पड़ता कि बाबा थोड़ा सा खाना खा लो। मेरी बात तुरन्त मान लेते। कभी जिद्द करके किसी बात पर रूठ जाते तो मुझे जाकर मनाना पड़ता। घंटे भर तक बाते सुनती उनकी। तब कहते कि बेटा बस ऐसे ही दिन में एक दो बार मेरे पास आकर बैठ जाओ तो कोई जिद नहीं करूंगा।

ऐसे चलता रहा। तीन चार दिन पहले सब परिवार वाले साथ बैठे थे तो मुझे अचानक बोले कि जब भी बाहर जाओ मुझसे दिन में एक बार मिलकर जरूर जाना। परिवार वालो ने पूछा क्यूं तो उन्होने जो बोला वो बताना तो नहीं चाहती पर संयुक्त परिवार और बुजुर्गो के महत्व को समझने के लिए शायद कहने की हिम्मत जुटाना ठीक प्रतीत हो रहा हैं, उन्होने गंभीर होते हुए मेरे लिए बोले कि इनका दर्शन करना भगवान के दर्शन करने जैसा है। हम सब आवाक रह गये। हम तो उनके बच्चे हैं। मैं हैरान थी हे भगवान आज बाबा क्या बोल रहे हैं।

बाबा ने शुरुआती जीवन में सख्त रवैया थोडा जरूर रखा पर बाद के जीवन काल में व्यवहार में बदलाव लाते गये। कोई कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा आशीर्वाद देंगे।

वास्तव में हम परिवार में बुजुर्गो को समझने में चूक करते हैं। यदि मैं शुरुआत में वैचारिक मतभेद कायम रख लेती तो धीरे-धीरे दूरीयां बनती जाती। संयम, सहन शक्ति ने परिवार बिखरने से बचाया और जिनसे ताउम्र शिकायत रहती आज ताउम्र बाबा जी के आशीर्वाद से खुद को धन्य को धन्य मानुंगी। उनके मुखारविन्द से बोले गए शब्द कानों में मन मष्तिष्क में गूंज रहे हैं। वे अपने हृदय से अपनी बहू बेटी को आशीर्वाद रूपी इतनी बड़ी पूंजी दे गए जिससे बडा इस संसार में कुछ है नहीं।

कुछ सालो में जीवन के प्रति अनासक्ति के भाव बाबा में प्रबल रहे। कहते बेटा अब चले जाने में फायदा। पिछले दो दिन से पूर्वाभास हो चुका था। बार-बार घर के गेट पर चले जाते और कहते "मुझे जूनकी ढ़ाणी जाना है अब" यानि मुझे मेरे पुराने घर जाना हैं। उसके दूसरे दिन यह उन्होने साबित कर दिया। जिस घर आये उस घर को चले गए। जैसी हरि इच्छा।

भावो को विराम देकर उन्हे समेटने से पहले एकाध बात और कहने को मन हो रहा है। मेरे दादा जी दिवंगत हुए उस समय मैं यूएसए थी। मुझे पहुँचने में चार पांच दिन लग गए। तब से बार-बार ख्याल आता कि कहीं ऐसा ना हो कि बाबा को कुछ हो जाए और मैं उस समय नहीं पहुँच पाऊं। यह भय आता ही रहता।

भगवान ने कृपा रखी। अंतिम समय में हॉस्पीटल में उनके पास रही। यहां तक अंतिम भोजन हाथ से करवाकर बातें करते हुए जैसे ही लिटाने के लिए सिर के नीचे तकिया दे सुला ही रही थी, सिर हाथों में था, बाबा ने आंखे मूंद ली। उन्होने अपनी माया समेट ली।

कल तक साथ थे। अब वो नहीं है। हमेशा हमेशा के लिए चले गए। अब कभी लोटना नहीं होगा। चली गई वो जिद। चली गई वो आवाज जो घर में आते ही आती कि कौन आया!!

अब किससे कहुंगी कि बाबा मैं आई हूं।।

टॉपलिंक हुंडई

টপলিংক হুন্ডাই

TOPLINK HYUNDAI

Hyundai Platinum Club Dealer

• Best Dealer CTB Sales at DDC • Best Dealer KPI Award (East Zone)

Wide range of options Available at Toplink Hyundai with EV facility.

TOPLINK HYUNDAI ELECTRIC

OUR DEALERSHIP PRESENCE

SALAP
NH - 6 Bombay Road, Domjur, JL-52 (Near Reliance Tower), Howrah - 711409
91473 68900
gm.sales@toplinkmotorcar.com

FORESHORE ROAD
109, Foreshore Road, Howrah - 711102
92309 99724
gmsales.fsroad@toplinkmotorcar.com

FORESHORE ROAD (SERVICE)
99, Foreshore Road, Near Shibpur Launch Ghat, Howrah - 711102
81009 76759
gmservice.fsroad@toplinkmotorcar.com

BAGNAN
Vill: Khadinan, P.O. - Bagnan (Near Library More), Howrah - 711303
81007 27076
gm.sales@toplinkmotorcar.com

ANKURHATI
JL NO 33, Kolkata International Hat, NH-02, Bombay Highway, Domjur, Mohairy II Gram Panchayat, Ankurhati, Howrah 711409
92309 99721
gmservice.ankurhati@toplinkmotorcar.com

MANGO, JAMSHEDPUR
NH-33, Dimna Paridih Road, Plot No. 183, Mouza: Deoghar, Jamshedpur - 831012
92638 37959
gmsales.3s@toplinkmotors.com

SAKCHI, JAMSHEDPUR
372/A, Straight Mile Road, Line No. 12, Kashidih Area, Sakchi, Jamshedpur 831001
92638 37959
gmsales.3s@toplinkmotors.com

DANKUNI
COMING SOON!

THE SINGHANIA GROUP
we connect you with happiness

092346 04629

CBSE Affiliation No.: 1730051

LK SINGHANIA EDUATION CENTRE

10+2 CBSE AFFILIATED RESIDENTIAL SCHOOL FOR BOYS & GIRLS

Member : IPSC, Round Square, AFS & BSAI
Participating Institution in the UNESCO ASP Net
ISO 9001, 14001 & 22000 Certified by LRQA, UK

तेजस्विनाव धीतमस्तु

Ranked
No.3 in INDIA
&
No.1 in RAJASTHAN
By
'Education Today'

ADMISSIONS OPEN 2025-26

Distinctive Features

- 250 acre beautifully landscaped campus
- Diverse Community of around 1000 Boarders
- Pastoral Care
- Digitally-Integrated Classrooms
- Wi-fi & BYOD enabled Classrooms
- Career Counselling
- Diversified activities including Karate
- Exposure to IPSC, Round Square, AFS & MUN events
- Well-equipped Libraries,
- Advanced Science Labs & Computer Labs
- World-class Multisports Facilities
- All-weather Olympic-sized Swimming Pool
- E-Go Karts facility
- Skill-based vocational Education
- Creative Pursuits through Fine-Arts, Music, and Dance
- Subjects Option - French language, Psychology (Besides Regular Subjects)

Meet us at:

26 JANUARY 2025
THE RASO HOTEL
Ranchi

28 JANUARY 2025
HOTEL RAMESHWARAM
Koderma

30 JANUARY 2025
PEARLTREE
Purulia

01 & 02 FEBRURAY 2025
THE SAMILTON HOTEL
Kolkata

04 FEBRUARY 2025
THE ORBITZ
Giridih

A Safe and Nurturing Environment

AIR-CONDITIONED CLASSROOMS & DINING HALLS | PURE, HYGIENIC VEG. MEALS | Medi 24x7 Care 100-BED DISPENSARY | 24 HR CCTV SURVEILLANCE MALE & FEMALE SECURITY GUARDS

CONTACT OUR ADMISSION TEAM
Mr. Arvind Saraswat
+91-87698 73515
Mr. Vasu Mukheja
+91-83602 60308

Gotan, Distt.- Nagaur, Rajasthan - 342902 info@lksec.org www.lksec.org

JKcement

:: Initiative By ::
J K WHITE CEMENT WORKS, GOTAN
(ISO-9001, ISO-14001, ISO-45001, ISO-50001 & SA-8000 Certified)

JK CEMENT WhiteMaxX White Portland Cement

Totally Committed to Product Excellence, Customers' Service and Social Responsibilities

RUPA®
TORRIDO
PREMIUM THERMAL
सर्दियों में
only
TORRIDO
STRETCHABLE | BODY-HUGGING | ATTRACTIVE COLOURS | SOFT AND NON-ITCHY
www.rupa.co.in | SMS 'RUPA' to 53456 | Toll Free No: 1800 1235 001 | Shop Online: www.rupaonlinestore.com

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2024-2026
Date of Publication - 24th January, 2025
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com